PRACTICE 3
MODEL PAPER
(Based on New Revised Syllabus)
(सम्पूर्ण हल)

हिन्दी कक्षा | 12

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक :** 100

निर्देश—(i) प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

(ii) इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं। दोनों खण्डों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक है।

खण्ड 'क'

1. (क) बाणकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्र है— 1

(i) हिन्दी प्रदीप (ii) समालोचक
(iii) हंस (iv) ब्राह्मण।

उत्तर : (i) हिन्दी प्रदीप।

(ख) 'अँधेर नगरी' के रचनाकार हैं— 1

(i) जयशंकरप्रसाद (ii) हरिकृष्ण प्रेमी
(iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) वियोगी हरि।

उत्तर : (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

(ग) 'नीड़ का निर्माण फिर' की विधा है— 1

(i) कहानी (ii) उपन्यास
(iii) संस्मरण (iv) आत्मकथा।

उत्तर : (iv) आत्मकथा।

(घ) डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित पत्रिका है— 1

(i) सरस्वती (ii) धर्मयुग
(iii) मर्यादा (iv) हंस।

उत्तर : (iii) मर्यादा।

(ङ) हिन्दी की प्रथम कहानी माना जाता है— 1

(i) नमक का दारोगा (ii) उसने कहा था
(iii) अपना-अपना भाग्य (iv) इन्दुमती।

उत्तर : (iv) इन्दुमती।

2. (क) 'नई कविता युग' के कवि हैं— 1

(i) भवानीप्रसाद मिश्र
(ii) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(iii) सुमित्रानन्दन पन्त
(iv) रामधारीसिंह 'दिनकर'

उत्तर : (i) भवानीप्रसाद मिश्र।

(ख) छायावाद की विशेषता है— 1

(i) इतिवृत्तात्मकता (ii) शृंगारिक भावना
(iii) सौन्दर्य एवं प्रेम (iv) उपदेशात्मक वृत्ति।

उत्तर : (iii) सौन्दर्य एवं प्रेम।

(ग) प्रयोगवाद के प्रवर्त्तक हैं— 1

(i) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'
(ii) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(iii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
(iv) शिवमंगल सिंह 'सुमन'।

उत्तर : (iii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

(घ) 'जयचन्द्रप्रकाश' रचना है— 1

(i) चन्दबरदायी की (ii) भट्ट केदार की
(iii) नरपति नाल्ह की (iv) विद्यापति की।

उत्तर : (ii) भट्ट केदार की।

(ङ) सुमित्रानन्दन पन्त की रचना है— 1

(i) यशोधरा (ii) रसकलश
(iii) ग्रन्थि (iv) राम की शक्तिपूजा।

उत्तर : (iii) ग्रन्थि।

3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $5 \times 2 = 10$

कालिदास के काव्यों में यह जिस शोभा और सौकुमार्य का भार लेकर प्रवेश करता है, वह पहले कहाँ था। उस प्रवेश में नववधू के गृह-प्रवेश की भाँति शोभा है, गरिमा है, पवित्रता है और सुकुमारता है। फिर एकाएक मुसलमानी सल्तनत की प्रतिष्ठा के साथ-ही-साथ यह मनोहर पुष्प साहित्य के सिंहासन से चुपचाप उतार दिया गया। नाम तो लोग बाद में भी लेते थे, पर उसी प्रकार बुद्ध और विक्रमादित्य का। अशोक को जो सम्मान कालिदास से मिला, वह अपूर्व था। सुन्दरियों के आसिंजनकारी नुपूरवाले चरणों के मृदु आघात से वह फूलता था।

प्रश्न : (क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर : पाठ का शीर्षक—अशोक के फूल।
लेखक का नाम—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न : (ख) कालिदास के काव्यों में अशोक का प्रवेश किस प्रकार हुआ?

उत्तर : कालिदास के काव्यों में अशोक का प्रवेश नववधू के गृह-प्रवेश की तरह हुआ।

प्रश्न : (ग) किस काल में अशोक को साहित्य के सिंहासन से उतार दिया गया?

उत्तर : मुसलमानी सल्तनतकाल में अशोक को साहित्य के सिंहासन से उतार दिया गया।

प्रश्न : (घ) अशोक को अपूर्व सम्मान किससे मिला?

उत्तर : अशोक को अपूर्व सम्मान कालिदास से मिला।

प्रश्न : (ङ) किसके मृदु आघात से अशोक फूलता था?

उत्तर : सुन्दरियों के आसिंजनकारी नुपूरवाले चरणों के मृदु आघात से अशोक फूलता था।

अथवा

भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा लेकर चलनेवाले भी कुछ राजनैतिक दल हैं, किन्तु वे भारतीय संस्कृति की सनातनता को उसकी गतिहीनता समझ बैठे हैं और इसलिए बीते युग की रूढ़ियों अथवा यथास्थिति का समर्थन करते हैं। संस्कृति के क्रान्तिकारी तत्त्व की ओर उनकी दृष्टि नहीं जाती। वास्तव में समाज में प्रचलित अनेक कुरीतियाँ; जैसे-छुआछूत, जाति-भेद, दहेज, मृत्युभोज, नारी-अवमानना आदि भारतीय संस्कृति और समाज के स्वास्थ्य की

© CHITRA PRAKASHAN

सूचक नहीं, बल्कि रोग के लक्षण हैं। भारत के अनेक महापुरुष जिनकी भारतीय परम्परा और संस्कृति के प्रति अनन्य निष्ठा थी, इन बुराइयों के विरुद्ध लड़े।

प्रश्न : (क) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर : **पाठ का नाम**—प्रगति के मानदण्ड।
लेखक का नाम—पं० दीनदयाल उपाध्याय।

प्रश्न : (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : **रेखांकित अंश की व्याख्या**—गतिशीलता ही एक अच्छी संस्कृति का मुख्य लक्षण है। जो संस्कृति स्वयं को वर्तमान सन्दर्भों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को नए परिवेश में ढाल लेती है, वही संस्कृति जीवित रहती है और जन-जीवन में उसकी प्रवाहशीलता बनी रहती है। इस गतिशीलता को संस्कृति का क्रान्तिकारी तत्त्व भी कहा जा सकता है, जिसकी ओर प्राय: राजनैतिक दलों का ध्यान नहीं जाता। संस्कृति के इस क्रान्तिकारी तत्त्व की उपेक्षा का ही परिणाम है कि आज भी समाज में छुआछूत, जात-पाँत, दहेज-प्रथा, मृत्यु-भोज, नारी के तिरस्कार का समर्थन किया जाता है। क्या वास्तव में ये सब रूढ़ परम्पराएँ ही भारतीय संस्कृति के सच्चे स्वरूप की परिचायक हैं? क्या इन परम्पराओं के वाहक समाज को स्वस्थ समाज की संज्ञा दी जा सकती है? यदि सभी लोग अथवा राजनैतिक अपने अन्त:करण में झाँककर देखें तो इन प्रश्नों का उत्तर नकारात्मक ही मिलेगा। वास्तव में ये परम्पराएँ स्वस्थ भारतीय संस्कृति और समाज की प्रतीक नहीं हैं, बल्कि उनके गम्भीर रूप से बीमार होने के लक्षण हैं, जिनका निदान किया जाना बहुत जरूरी है। यदि इनका निदान नहीं किया गया तो भारतीय संस्कृति और समाज छिन्न-भिन्न होकर अपने अस्तित्व को समाप्त कर लेंगे।

प्रश्न : (ग) भारतीय संस्कृति की किस विशेषता को उसकी गतिहीनता समझ लिया जाता है?

उत्तर : भारतीय संस्कृति की सनातनता को उसकी गतिहीनता समझ लिया जाता है।

प्रश्न : (घ) कौन-से राजनैतिक दल बीते युग की रूढ़ियों का समर्थन करते हैं?

उत्तर : भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा लेकर चलनेवाले राजनैतिक दल बीते युग की रूढ़ियों का समर्थन करते हैं।

(ङ) भारतीय संस्कृति के रोग के लक्षण क्या हैं?

उत्तर : छुआछूत, जाति-भेद, दहेज, मृत्यु-भोज, नारी-अवमानना आदि भारतीय संस्कृति के रोग के लक्षण हैं।

4. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— $5 \times 2 = 10$

कृपानिधान सुजान संभु हिय की गति जानी।
दियौ सीस पर ठाम बाम करि कै मनमानी॥
सकुचाति ऐचति अंग गंग सूख संग लजानी।
जटा-जूट हिम कूट सघन बन सिमिटि समानी॥

प्रश्न : (क) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और रचयिता का नाम लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश कविवर **जगन्नाथदास 'रत्नाकर'** द्वारा रचित काव्य-ग्रन्थ **'गंगावतरण'** से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित **'गंगावतरण'** शीर्षक से उद्धृत है।

प्रश्न : (ख) गंगा के हृदय की बात किसने जानी?

उत्तर : गंगा के हृदय की बात शम्भू ने जानी।

प्रश्न : (ग) शिवजी ने किसे स्त्री मान लिया और कहाँ स्थान दे दिया?

उत्तर : शिवजी ने गंगा को स्त्री मान लिया और अपने शीश पर धारण करने उसे वामांग पर स्थान दिया।

प्रश्न : (घ) गंगा को किस प्रकार का अनुभव हुआ?

उत्तर : गंगा को शिव द्वारा प्रियतमा के रूप में वामांग स्थान प्रदान करने पर संकोच का अनुभव हुआ।

प्रश्न : (ङ) गंगा को शिव के जटा-जूट कैसे लग रहे हैं?

उत्तर : गंगा को शिव के जटा-जूट सघन हिमालय की चोटियों जैसे लग रहे हैं।

अथवा

सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल,
लेटी है श्रान्त, क्लान्त, निश्चल।
तापस बाला, गंगा निर्मल, शशिमुख से दीपित मृदु करतल,
लहरे उन कोमल कुन्तल।
गोरे अंगों पर सिहर-सिहर, लहराता तार-तरल सुन्दर
चंचल अंचल-सा नीलाम्बर।

प्रश्न : (क) उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और रचनाकार का नाम लिखिए।

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश प्रसिद्ध छायावादी कवि **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'गुंजन'** काव्य से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित **'नौका-विहार'** शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रश्न : (ख) रेत की शय्या पर क्षीणकाय थकी स्त्री-सी कौन लेटी हुई है?

उत्तर : रेत की शय्या पर क्षीणकाय थकी स्त्री-सी गंगा लेटी हुई है।

प्रश्न : (ग) गंगा का स्वरूप किस प्रकार दिखलाई पड़ रहा है?

उत्तर : गंगा का स्वरूप तपस्विनी-बाला जैसा दिखलाई पड़ रहा है, मानो वह अपने मुखचन्द्र को अपनी कोमल हथेली पर रखे लेटी हो और केश उसके वक्षस्थल पर लहरा रहे हों।

प्रश्न : (घ) किसके शरीर पर तारों के प्रतिबिम्ब लहरा रहे हैं?

उत्तर : गंगा के जल में पड़ती हुई तारों-भरी आकाश की परछाईं ऐसी प्रतीत हो रही है, मानो उस गंगारूपी तपस्विनी बाला के गोरे अंगों के स्पर्श से बार-बार काँपता तारों-जड़ा उसका नीला आँचल लहरा रहा हो।

प्रश्न : (ङ) श्रति, क्लान्त और निश्चल का आश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : श्रान्त, क्लान्त और निश्चल का आशय थकान से व्याकुल, मुरझाई और शान्त है।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय, रचनाओं और भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए— $3 + 2 = 5$

(i) वासुदेवशरण अग्रवाल
(ii) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
(iii) पं० दीनदयाल उपाध्याय।

उत्तर :

(i) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

जीवन-परिचय—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म **सन् 1904 ई०** में मेरठ जनपद के **खेड़ा** ग्राम में हुआ था। इनके माता-पिता लखनऊ में रहते थे; अत: इनका बाल्यकाल लखनऊ में ही व्यतीत हुआ। यहीं इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा भी प्राप्त की। इन्होंने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' से एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। 'लखनऊ विश्वविद्यालय' ने 'पाणिनिकालीन भारत' शोध-प्रबन्ध पर इनको पी-एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया। यहीं से इन्होंने डी० लिट्० की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने पालि, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व का गहन अध्ययन किया और इन क्षेत्रों में उच्चकोटि के विद्वान् माने जाने लगे।

हिन्दी के इस प्रकाण्ड विद्वान् को **सन् 1967 ई०** में नियति ने हमसे छीन लिया।

रचनाएँ—डॉ० अग्रवाल ने निबन्ध-रचना, शोध और सम्पादन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) निबन्ध-संग्रह—(1) पृथिवी-पुत्र, (2) कल्पलता, (3) कला और संस्कृति, (4) कल्पवृक्ष, (5) भारत की एकता, (6) माता भूमि, (7) वाग्धारा आदि।

(2) शोध—पाणिनिकालीन भारत।

(3) सम्पादन—(1) जायसीकृत पद्मावत की संजीवनी व्याख्या, (2) बाणभट्ट के हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन। इसके अतिरिक्त इन्होंने पालि, प्राकृत और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का भी सम्पादन किया।

भाषा-शैली—डॉ० अग्रवाल अन्वेषक विद्वान् थे; अत: इनकी भाषा-शैली में उत्कृष्ट पाण्डित्य के दर्शन होते हैं। इनकी भाषा-शैली की विशेषताएँ अग्र प्रकार हैं—

© CHITRA PRAKASHAN

(अ) भाषागत विशेषताएँ—डॉ० अग्रवाल की भाषा शुद्ध और परिष्कृत खड़ीबोली है, जिसमें सुबोधता और स्पष्टता सर्वत्र विद्यमान है। इन्होंने अपनी भाषा में अनेक देशज शब्दों का प्रयोग किया है; जैसे—अनगढ़, कोख, चिलकते आदि। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा में सरलता और सुबोधता तो उत्पन्न हुई ही है, साथ ही उसमें व्यावहारिक भाषा का जीवन-सौष्ठव भी देखने को मिलता है। इनकी भाषा में उर्दू, अंग्रेजी आदि की शब्दावली, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग प्राय: नहीं हुआ है। इस प्रकार इनकी प्रौढ़, संस्कृतनिष्ठ और प्रांजल भाषा में गम्भीरता के साथ सुबोधता, प्रवाह और लालित्य विद्यमान है।

(ब) शैलीगत विशेषताएँ—इनकी शैली की विविध विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) विचारप्रधानता (विचारप्रधान शैली)
(2) गवेषणात्मकता (गवेषणात्मक शैली)
(3) व्याख्यात्मकता (व्याख्यात्मक शैली)
(4) उद्धरणों का प्रयोग (उद्धरण शैली)।

(ii) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

जीवन-परिचय—हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्धकार, उपन्यासकार, आलोचक एवं भारतीय संस्कृति के युगीन व्याख्याता आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म **सन् 1907 ई०** में बलिया जिले के **दुबे का छपरा** नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम **अनमोल द्विवेदी** और माता का नाम **ज्योतिकली देवी** था। इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत भाषाओं का गहन अध्ययन किया। 'शान्ति निकेतन', 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' एवं 'पंजाब विश्वविद्यालय' जैसी संस्थाओं में ये हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे। सन् 1949 ई० में 'लखनऊ विश्वविद्यालय' ने उन्हें डी० लिट्० की मानद उपाधि से सम्मानित किया तथा सन् 1957 ई० में भारत सरकार ने 'पद्म-भूषण' की उपाधि से विभूषित किया। ये उत्तर प्रदेश सरकार की 'हिन्दी ग्रन्थ अकादमी' के अध्यक्ष भी रहे।

सेवा-निवृत्त होने के पश्चात् भी ये निरन्तर साहित्य-सेवा में जुटे रहे। **19 मई, सन् 1979 ई०** को यह महान् साहित्यकार रोग-शय्या पर ही चिरनिद्रा में सो गया।

रचनाएँ—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनको निम्नलिखित वर्गों में प्रस्तुत किया गया है—

(1) निबन्ध-संग्रह—(1) अशोक के फूल, (2) कुटज, (3) विचार-प्रवाह, (4) विचार और वितर्क, (5) आलोक पर्व, (6) कल्पलता।

(2) आलोचना-साहित्य—(1) सूर-साहित्य, (2) कालिदास की लालित्य योजना, (3) कबीर, (4) साहित्य-सहचर, (5) साहित्य का मर्म।

(3) इतिहास—(1) हिन्दी-साहित्य की भूमिका, (2) हिन्दी-साहित्य का आदिकाल, (3) हिन्दी-साहित्य।

(4) उपन्यास—(1) बाणभट्ट की आत्मकथा, (2) चारु-चन्द्र-लेख, (3) पुनर्नवा, (4) अनामदास का पोथा।

(5) सम्पादन—(1) नाथ-सिद्धों की बानियाँ, (2) संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, (3) सन्देश रासक।

(6) अनूदित रचनाएँ—(1) प्रबन्ध-चिन्तामणि, (2) पुरातन-प्रबन्ध-संग्रह, (3) प्रबन्ध-कोश, (4) विश्व-परिचय, (5) लाल कनेर, (6) मेरा बचपन आदि।

भाषा-शैली—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीजी सरल, स्वाभाविक और सहज रूप में बोधगम्य भाषा का प्रयोग करने में कुशल थे। इनकी भाषा-शैली पर आधारित प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

(अ) भाषागत विशेषताएँ—द्विवेदीजी की भाषागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

द्विवेदीजी की भाषा में बोलचाल की भाषा की ही प्रधानता रही है। बोलचाल की भाषा के माध्यम से इन्होंने गम्भीर तथ्यों को भी सरलता से प्रस्तुत कर दिया है। इन्होंने सभी प्रचलित भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करके हिन्दी को समृद्ध बनाया। द्विवेदीजी ने संस्कृत शब्दावली को प्राय: तत्सम रूप में ही स्वीकार किया है; जैसे—भण्डार, भग्नावशेष, प्रारम्भ, क्रियमाण, औत्सुक्य, सलज्ज, अवगुण्ठन आदि। द्विवेदीजी ने अपनी अभिव्यक्ति को गहनता के साथ प्रस्तुत करने, भाषा को लोकप्रिय, सरस एवं मनोरंजक बनाने तथा अपने मत के समर्थन के लिए संस्कृत, हिन्दी, बाँग्ला आदि की सूक्तियों का भी पर्याप्त प्रयोग किया है। इन्होंने लोकोक्तियों और मुहावरों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया है। मुहावरों और लोकोक्तियों को इन्होंने स्थानीय बोलचाल की भाषा से ग्रहण किया है।

(ब) शैलीगत विशेषताएँ—द्विवेदीजी की शैलीगत विशेषताएँ मुख्य रूप से इस प्रकार हैं—

(1) गवेषणात्मकता (गवेषणात्मक शैली)—द्विवेदीजी ने शोध और पुरातत्त्व से सम्बन्धित निबन्धों की रचना गवेषणात्मक शैली में ही की है। साहित्य के विभिन्न पक्षों पर विचार करते समय तथा शब्दों के नाम-गोत्र, कुशल-क्षेम का पता लगाने में आचार्य द्विवेदी की गवेषणात्मकता विशेष रूप से दिखाई देती है।

(2) वैयक्तिकता (आत्मपरक शैली)—गम्भीर स्थलों पर जब प्रसंग में आत्मीयता उत्पन्न हुई है अथवा जब द्विवेदीजी प्रसंग के साथ स्वयं को जोड़ना चाहते हैं, तब इनकी शैली आत्मपरक हो गई है। इस शैली में सहजता, सहृदयता और काव्यात्मकता का गुण विद्यमान है।

(3) विचारात्मकता (विचारात्मक शैली)—द्विवेदीजी के अधिकांश निबन्ध विचारात्मक हैं। इन्होंने गम्भीर-से-गम्भीर विषय को बड़ी कुशलता तथा बोधगम्य ढंग से प्रस्तुत किया है। इस शैली में संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है।

(4) वर्णनात्मकता (वर्णनात्मक शैली)—द्विवेदीजी की वर्णनात्मक शैली इतनी सजीव है कि वह एक चित्र-सा प्रस्तुत कर देती है। इस शैली पर आधारित भाषा सरल तथा प्रवाहपूर्ण है।

(5) सूत्रात्मकता (सूत्रात्मक शैली)—अनेक स्थलों पर द्विवेदीजी के वाक्यों ने सूत्रों का रूप धारण कर लिया है। इस सूत्रात्मकता के फलस्वरूप उनके कथनों में विलक्षणता और चमत्कार की सृष्टि हुई है।

(6) आलंकारिकता (आलंकारिक शैली)—द्विवेदीजी ने कहीं-कहीं अभिव्यक्ति को चमत्कार प्रदान करने के लिए आलंकारिक शैली का भी प्रयोग किया है। इस शैली के प्रयोग से उनका गद्य, काव्य जैसा मनोरम हो गया है।

(7) व्यंग्यात्मकता (व्यंग्यात्मक शैली)—इस शैली के अन्तर्गत द्विवेदीजी ने बड़ी मीठी चुटकियाँ ली हैं। साहित्यकारों और प्रचलित साहित्यिक प्रवृत्तियों पर इन्होंने करारे व्यंग्य किए हैं।

(iii) पं० दीनदयाल उपाध्याय

जीवन-परिचय—प्रखर विचारक और भारतीय संस्कृति के उपासक पं० दीनदयाल उपाध्याय का जन्म **25 सितम्बर, 1916 ई०** को मथुरा जिले के **नगला चन्द्रभान** नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम **भगवतीप्रसाद** और माता का नाम **रामप्यारी** था। इनके प्रपितामह **पण्डित हरिराम उपाध्याय** अपने समय के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनकी माता अत्यन्त कर्त्तव्य-परायण महिला थीं। इनके पिता भगवतीप्रसाद जलेसर में सहायक स्टेशन मास्टर थे। अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मात्र ढाई वर्ष की आयु में ये अपनी माता और भाई के साथ अपने नाना के यहाँ आ गए। कुछ दिनों पश्चात् इनके पिता की मृत्यु हो गई। इनकी आयु अभी सात वर्ष की ही थी कि इनकी माता रामप्यारी का भी क्षयरोग से देहान्त हो गया। इन्होंने दसवीं की परीक्षा सीना के कल्याण हाईस्कूल से दी और पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान पाकर तत्कालीन सीना के महाराजा कल्याण सिंह से स्वर्णपदक, छात्रवृत्ति और पुस्तकों के लिए 250 रुपये प्राप्त किए। इण्टरमीडिएट की परीक्षा इन्होंने पिलानी के बिरला कॉलेज से दी और इसमें भी इन्होंने पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन्होंने बी०ए० की परीक्षा सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर और एम०ए० पूर्वार्द्ध की परीक्षा अंग्रेजी विषय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अपनी ममेरी बहन की बीमारी के कारण ये एम०ए० अंग्रेजी उत्तरार्द्ध की परीक्षा नहीं दे सके। इसके बाद

© CHITRA PRAKASHAN

ये प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठे और उत्तीर्ण होकर कुछ दिन इन्होंने प्रशासनिक पद पर अपनी सेवाएँ दीं। इसके बाद इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय हो गए। जब ये पिलानी में थे तो वहाँ अध्ययन करते हुए ही इन्होंने पढ़ाई में कमजोर छात्रों के लिए **'जीरो एसोसिएशन'** का गठन करके उन छात्रों को पढ़ाने की व्यवस्था की। ये राजनीति में भारतीयता और संस्कृति के समावेश के प्रबल समर्थक थे। अपनी इसी वैचारिक प्रखरता के कारण अनेक लोग इनसे मन-ही-मन द्वेष रखने लगे। इनके लिए यह वैचारिक विद्वेष प्राणघातक सिद्ध हुआ और लखनऊ से पटना की रेलयात्रा के दौरान **11 फरवरी, 1968 ई०** को प्रात:काल चार बजे मुगलसराय स्टेशन के पास रेलवे लाइन पर ये घायलावस्था में मृत पाए गए।

रचनाएँ—पण्डित दीनदयाल उपाध्याय उच्चकोटि के निबन्धकार, उपन्यासकार और सहृदय कवि थे। कवि के रूप में इन्हें विशेष ख्याति प्राप्त नहीं हुई। इनके द्वारा रचित प्रमुख रचनाओं का उल्लेख इस प्रकार है—

(1) उपन्यास—पण्डित दीनदयाल ने अपनी रेल-यात्राओं के दौरान दो प्रसिद्ध उपन्यास लिखे—(1) सम्राट् चन्द्रगुप्त, (2) शंकराचार्य की जीवनी। लेखन के प्रति इनकी प्रतिबद्धता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' का लेखन इन्होंने एक ही बैठक में पूर्ण कर दिया।

(2) निबन्ध-संग्रह—(1) एकात्म मानववाद, (2) द टू प्लान्स, (3) भारतीय अर्थनीति : दशा और दिशा, (4) अखण्ड भारत क्यों?, (5) भारतीय अर्थनीति : विकास की दशा, (6) राष्ट्रीय जीवन की समस्याएँ, (7) इण्टेग्रिल ह्यूमनिज्म, (8) राष्ट्र-चिन्तन, (9) राष्ट्र-जीवन की दिशा, (10) भारतीय अर्थनीति : विकास की एक दिशा, (11) टैक्स या लूट, (12) लोकमान्य तिलक की राजनीति, (13) जनसंघ : सिद्धान्त एवं नीति, (14) जीवन का ध्येय, (15) राष्ट्रीय आत्मानुभूति, (16) हमारा कश्मीर, (17) अखण्ड भारत, (18) भारतीय राष्ट्रीयधारा का पुन: प्रवाह, (19) भारतीय संविधान पर एक दृष्टि, (20) इनको भी आजादी चाहिए।

भाषा-शैली—उपाध्यायजी की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(अ) भाषागत विशेषताएँ—पं० दीनदयाल उपाध्याय जमीन से जुड़े विचारक और समाज-सेवी व्यक्ति थे, इसीलिए इन्होंने अपनी रचनाओं में जनसाधारण के साथ सहजता से संवाद स्थापित करने के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया। ग्रामीण जनता तक पहुँच बनाने के लिए वे अपना मूल समाचार और वक्तव्य हिन्दी में लिखते थे। इनका अंग्रेजी से कोई बैर नहीं था, परन्तु वे चाहते थे कि मुख्य रूप से भारतीय भाषाओं पर अधिक-से-अधिक ध्यान दिया जाए। ये हिन्दीसहित सभी भारतीय भाषाओं की आजादी के पक्षधर थे। साथ ही यह भी चाहते थे कि विधिशस्त्र, विज्ञान एवं अन्य तकनीकी विषयों के लिए हिन्दी में नए-नए शब्दों का निर्माण किया जाए।

(ब) शैलीगत विशेषताएँ—पं० दीनदयालजी ने अनेक विषयों पर आधारित निबन्धों की रचना की है। इन सभी में उन्होंने विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। इनमें से प्रमुख शैलियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है—

(1) विचारात्मक शैली—पं० दीनदयालजी ने अधिकांशत: गम्भीर और चिन्तनपूर्ण विषयों पर ही लेखनी चलाई है, इसी कारण उनकी शैली विशेषत: विचारप्रधान ही है। उनके द्वारा प्रयुक्त इस शैली की भाषा गम्भीर और परिमार्जित है।

(2) प्रश्नात्मक शैली—व्यवस्था में जवाबदेही तय करते समय इनकी शैली प्रश्नात्मक भी हो गई है। इनकी इस शैली में इनके गम्भीर चिन्तन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

(3) उद्धरण शैली—उपाध्यायजी का अध्ययन अत्यन्त व्यापक और गहन था। इसी कारण उन्होंने अनेक स्थलों पर हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत के उद्धरणों का प्रयोग भी किया है।

(4) आलोचनात्मक शैली—आलोचनात्मक साहित्य के सृजन की दृष्टि से पं० दीनदयालजी का हिन्दी-साहित्य-जगत् में अपना विशिष्ट स्थान है। उनकी आलोचनात्मक शैली में उनकी विद्वत्ता और अध्ययनशीलता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

(5) विवेचनात्मक शैली—विषयानुसार जहाँ भी आवश्यकता हुई है, वहाँ उन्होंने बड़े ही तार्किक और अकाट्य रूप में विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस शैली में जीवन और संसार के प्रति उनके व्यापक दृष्टिकोण का परिचय प्राप्त होता है।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं तथा भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए— 3 + 2 = 5

(i) जयशंकरप्रसाद (ii) मैथिलीशरण गुप्त (iii) महादेवी वर्मा।

उत्तर :

(i) जयशंकरप्रसाद

जीवन-परिचय—छायावादी युग के प्रवर्त्तक महाकवि जयशंकरप्रसाद का जन्म काशी के एक सम्पन्न वैश्य-परिवार में **सन् 1889 ई०*** **(संवत् 1946)** में हुआ था। इनके पिता तथा बड़े भाई बचपन में ही स्वर्गवासी हो गए थे। अल्पावस्था में ही लाड़-प्यार से पले प्रसादजी को घर का सारा भार वहन करना पड़ा। इन्होंने विद्यालयीय शिक्षा छोड़कर घर पर ही अंग्रेजी, हिन्दी, बाँग्ला तथा संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञानार्जन किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी इन्होंने अपने भीतर काव्य-प्रेरणा को जीवित रखा। जब भी समय मिलता, इनका मन भाव-जगत् के पुष्प चुनता, जिन्हें ये दुकान की बही के पन्नों पर सँजो दिया करते थे।

अत्यधिक श्रम तथा जीवन के अन्तिम दिनों में राजयक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण **14 नवम्बर, सन् 1937 ई० (संवत् 1994)** को 48 वर्ष की अल्पायु में ही इनका स्वर्गवास हो गया।

रचनाएँ—प्रसादजी सर्वतोन्मुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे। इन्होंने कुल 67 रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इनकी प्रमुख काव्य-रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

(1) कामायनी—यह महाकाव्य छायावादी काव्य का कीर्ति-स्तम्भ है। इस महाकाव्य में मनु और श्रद्धा के माध्यम से मानव को हृदय (श्रद्धा) और बुद्धि (इड़ा) के समन्वय का सन्देश दिया गया है।

(2) आँसू—यह वियोग पर आधारित काव्य है। इसके एक-एक छन्द में दु:ख और पीड़ा साकार हो उठी है।

(3) चित्राधार—यह प्रसादजी का ब्रजभाषा में रचित काव्य-संग्रह है।

(4) लहर—इसमें प्रसादजी की भावात्मक कविताएँ संगृहीत हैं।

(5) झरना—यह प्रसादजी की छायावादी कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह में सौन्दर्य और प्रेम की अनुभूतियों को मनोहारी रूप में वर्णित किया गया है।

इनके अतिरिक्त प्रसादजी ने अन्य विधाओं में भी साहित्य-रचना की है। उनका विवरण निम्न प्रकार है—

1. नाटक—नाटककार के रूप में उन्होंने 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'कामना', 'एक घूँट', 'विशाख', 'राज्यश्री', 'कल्याणी', 'अजातशत्रु' और 'प्रायश्चित्त' नाटकों की रचना की है।

2. उपन्यास—'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अपूर्ण रचना)।

3. कहानी-संग्रह—प्रसादजी उत्कृष्ट कोटि के कहानीकार थे। इनकी कहानियों में भारत का अतीत मुस्कराता है। 'प्रतिध्वनि', 'छाया', 'आकाशदीप', 'आँधी' और 'इन्द्रजाल' इनके कहानी-संग्रह हैं।

4. निबन्ध—'काव्य और कला'।

(ii) मैथिलीशरण गुप्त

जीवन-परिचय—श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव (झाँसी) में **सन् 1886 ई० (संवत् 1943)** में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त को हिन्दी-साहित्य से विशेष प्रेम था। गुप्तजी की शिक्षा-दीक्षा घर पर

*हिन्दी साहित्य का इतिहास—डॉ० नगेन्द्र के अनुसार, पृष्ठ 545.

©CHITRA PRAKASHAN

ही सम्पन्न हुई। घर के साहित्यिक वातावरण के कारण इनमें काव्य के प्रति अभिरुचि जाग्रत हुई। **12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० (संवत् 2021)** में गुप्तजी का देहावसान हो गय।

रचनाएँ—गुप्तजी की रचनाएँ दो प्रकार की हैं—(क) अनूदित, (ख) मौलिक। इनका साहित्य विशाल है और विषय-क्षेत्र बहुत विस्तृत।

(क) मौलिक रचनाएँ—इनकी प्रमुख मौलिक रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) भारत-भारती—इसमें देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाओं पर आधारित कविताएँ हैं। इसी रचना के कारण वे राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए।

(2) साकेत—'श्रीरामचरितमानस' के पश्चात् हिन्दी में राम-काव्य का दूसरा स्तम्भ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' ही है।

(3) यशोधरा—इसमें उपेक्षित यशोधरा के चरित्र को काव्य का आधार बनाया गया है।

गुप्तजी की अन्य प्रमुख पुस्तकें 'जयद्रथ-वध', 'झंकार', 'सिद्धराज', 'कुणाल गीत', 'अनघ', 'पंचवटी', 'द्वापर', 'नहुष', 'पृथ्वीपुत्र' तथा 'प्रदक्षिणा' आदि हैं।

(ख) अनूदित रचनाएँ—'प्लासी का युद्ध', 'मेघनाद-वध', 'वृत्र-संहार' आदि।

(iii) महादेवी वर्मा

जीवन-परिचय—'पीड़ा की गायिका' अथवा 'आधुनिक युग की मीरा' के नाम से विख्यात श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म **सन् 1907 ई० (संवत् 1964)** में उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध नगर फर्रुखाबाद में होलिका-दहन के पुण्य पर्व के दिन हुआ था। इनकी माता **हेमरानी** साधारण कवयित्री थीं। वे श्रीकृष्ण में अटूट श्रद्धा रखती थीं। इनके नाना भी ब्रजभाषा में कविता करते थे। नाना एवं माता के इन गुणों का महादेवीजी पर भी प्रभाव पड़ा। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह **स्वरूपनारायण वर्मा** से हो गया था; किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का भी स्वर्गवास हो गया। माँ का साया सिर से उठ जाने पर भी इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा तथा पढ़ने में और अधिक मन लगाया। परिणामस्वरूप इन्होंने मैट्रिक से लेकर एम०ए० तक की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। बहुत समय तक ये 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' में प्रधानाचार्या के पद पर कार्यरत रहीं।

महादेवीजी का स्वर्गवास 80 वर्ष की अवस्था में **11 सितम्बर, सन् 1987 ई० (संवत् 2044)** को हो गया।

रचनाएँ—महादेवीजी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) नीहार—इस काव्य-संकलन में भावमय गीत संकलित हैं। उनमें वेदना का स्वर मुखरित हुआ है।

(2) रश्मि—इस संग्रह में आत्मा-परमात्मा के मधुर सम्बन्धों पर आधारित गीत संकलित हैं।

(3) नीरजा—इसमें प्रकृतिप्रधान गीत संकलित हैं। इन गीतों में सुख-दु:ख की अनुभूतियों को वाणी मिली है।

(4) सान्ध्यगीत—इसके गीतों में परमात्मा से मिलन का आनन्दमय चित्रण है।

(5) दीपशिखा—इसमें रहस्यभावनाप्रधान गीतों को संकलित किया गया है।

इनके अतिरिक्त 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'शृंखला की कड़ियाँ' आदि इनकी गद्य-रचनाएँ हैं। 'यामा' नाम से इनके विशिष्ट गीतों का संग्रह प्रकाशित हुआ है। 'सन्धिनी' और 'आधुनिक कवि' भी इनके गीतों के संग्रह हैं।

6. 'बहादुर' *अथवा* 'कर्मनाशा की हार' कहानी की कथा अपने शब्दों में लिखिए। **5**

उत्तर :

'बहादुर' कहानी का कथानक

दिलबहादुर एक पहाड़ी नेपाली लड़का है, जो इस कहानी का नायक है। वह एक असहाय बालक है। उसके पिता की युद्ध में मृत्यु हो चुकी थी। उसकी माँ उसे बहुत पीटती थी। इसलिए वह घर से भाग आया और उसने एक मध्यमवर्गीय परिवार में नौकरी कर ली।

बहादुर बड़े परिश्रम से घर में काम करने लगा। गृहस्वामिनी निर्मला उसके काम से बहुत खुश थी। निर्मला ने उसका नाम 'बहादुर' रखा। बहादुर की मेहनत के कारण मकान साफ-सुथरा रहने लगा और घर में सभी सदस्यों के कपड़े साफ रहने लगे। बहादुर देर रात तक काम करता और सुबह जल्दी उठकर काम में जुट जाता। वह इसी में खुश था और हर समय हँसता रहता था। वह रात को सोते समय पहाड़ी भाषा में कोई गीत गुनगुनाता रहता था। हँसना और हँसाना मानो उसकी आदत बन गई थी।

निर्मला का बड़ा लड़का किशोर एक बिगड़ा हुआ लड़का था। वह शान-शौकत और रोब-दाब से रहने का समर्थक था। उसने अपने सारे काम बहादुर को सौंप दिए थे। यदि बहादुर उसके काम में तनिक-सी भी असावधानी बरतता तो उसे गालियाँ मिलतीं। इतना ही नहीं, वह छोटी-छोटी-सी बात पर बहादुर को पीटता भी था। पिटकर बहादुर एक कोने में चुपचाप खड़ा हो जाता और कुछ देर बाद घर के कार्यों में पूर्ववत् जुट जाता। एक दिन किशोर ने बहादुर को 'सूअर का बच्चा' कह दिया। बहादुर इस गाली को सहन न कर सका, उसका स्वाभिमान जाग गया और उसने उसका काम करने से इनकार कर दिया। जब निर्मला के पति ने भी उसे डाँटा तो उसने कहा—

"बाबूजी, भैया ने मेरे मरे बाप को क्यों लाकर खड़ा किया?"

इतना कहकर वह रो पड़ा।

प्रारम्भ में निर्मला बहादुर को बहुत प्यार से रखती थी तथा उसके खाने-पीने का भी बहुत ध्यान रखती थी, लेकिन कुछ दिनों के बाद उसका व्यवहार भी बदल गया। उसने बहादुर की रोटी सेंकना बन्द कर दिया।

अब घर की स्थिति यह हो गई थी कि जरा-सी गलती होने पर भी किशोर और निर्मला उसे पीटते। मारपीट और गालियों के कारण बहादुर से गलतियाँ और भूलें अधिक होने लगीं। एक रविवार को निर्मला के रिश्तेदार अपनी पत्नी और बच्चों के साथ निर्मला के घर आए। नाश्ता करने के बाद बातों की जलेबी छनने लगी। अचानक उस रिश्तेदार की पत्नी नीचे फर्श पर झुककर देखने लगी और चारपाई पर कमरे के अन्दर भी छानबीन करने लगी। पूछने पर उसने बताया कि उसके ग्यारह रुपये खो गए हैं, जो उन्होंने चारपाई पर ही निकालकर रखे थे। इसके बाद सबने बहादुर पर सन्देह किया।

बहादुर से पूछा गया। उसने रुपये उठा लेने से इनकार कर दिया। उसे खूब पीटा भी गया और पुलिस के सुपुर्द करने की धमकी भी दी गई। निर्मला ने भी बहादुर को डराया, धमकाया और पीटा। सब सोच रहे थे कि पिटाई के डर से वह अपना अपराध स्वीकार कर लेगा, लेकिन जब उसने रुपये लिए ही नहीं तो वह कैसे कहता कि रुपये उसने उठाए थे। इस घटना के बाद से घर के सभी सदस्य बहादुर को सन्देह की दृष्टि से देखने लगे और उसे कुत्ते की तरह दुत्कारने लगे।

उस दिन के बाद से बहादुर बहुत ही खिन्न रहने लगा और एक दिन दोपहर को अपना बिस्तर, पहनने के कपड़े, जूते आदि सभी सामान छोड़कर घर से चला गया। निर्मला के पति शाम को जब दफ्तर से लौटे तो उन्होंने निर्मला को सिर पर हाथ रखे परेशान देखा। आँगन गन्दा पड़ा था, बर्तन बिना मँजे पड़े थे और घर का सामान अस्त-व्यस्त था। कारण पूछने पर पता चला कि बहादुर अपना सामान छोड़कर घर से चला गया। निर्मला, उसके पति और किशोर को उसकी ईमानदारी पर विश्वास हो गया था। उन्होंने कहा कि रिश्तेदारों के रुपये भी उसने नहीं चुराए थे। निर्मला, उसका पति और किशोर सभी बहादुर पर किए गए अत्याचारों के लिए पश्चात्ताप करने लगे।

अथवा

'कर्मनाशा की हार' कहानी का कथानक

कर्मनाशा नदी के किनारे नई डीह नामक एक गाँव है। इस गाँव में भैरो पाण्डे नामक एक पण्डित हैं, जो पैरों से अपाहिज हैं। भैरो पाण्डे के माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है। माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने अपने दो-वर्षीय छोटे भाई कुलदीप का पालन-पोषण पुत्र की तरह किया, जो अब सोलह वर्ष का नवयुवक हो चुका है।

© CHITRA PRAKASHAN

भैरो पाण्डे के पुश्तैनी मकान के समीप ही एक मल्लाह परिवार रहता है। फुलमत इसी परिवार की विधवा पुत्री है। एक दिन फुलमत भैरो पाण्डे के यहाँ बाल्टी माँगने आती है। भैरो पाण्डे कुलदीप से उसे बाल्टी देने के लिए कहते हैं। बाल्टी देते समय कुलदीप फुलमत से टकरा जाता है। फुलमत पहले सकपकाती है, फिर मुस्करा देती है। कुलदीप भी उसकी ओर मुग्ध दृष्टि से देखता है। भैरो पाण्डे यह सब देख लेते हैं। वे उन दोनों से तो कुछ नहीं कहते, परन्तु कुलदीप के क्रियाकलापों पर दृष्टि रखने लगते हैं।

कुलदीप एवं फुलमत एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। वे एक दिन चाँदनी रात में कर्मनाशा के तट पर छुपकर मिलने चले जाते हैं। भैरो पाण्डे संयोगवश उन दोनों को देख लेते हैं। वे यह देखकर क्रोधित हो उठते हैं और दोनों को डाँटते हैं। कुलदीप पर तो उन्हें इतना क्रोध आता है कि वे उसके गाल पर थप्पड़ मार देते हैं। इस घटना के बाद कुलदीप घर से भाग जाता है। भैरो पाण्डे उसे बहुत ढूँढते हैं, किन्तु वह नहीं मिलता।

कुलदीप को घर से भागे हुए चार-पाँच महीने व्यतीत हो जाते हैं कि कर्मनाशा नदी में बाढ़ आ जाती है। नदी की उमड़ती हुई विकराल धारा को देखकर गाँव के सभी लोग भयभीत हो जाते हैं। उनमें यह अन्धविश्वास प्रचलित है कि कर्मनाशा जब उमड़ती है तो मानव-बलि अवश्य लेती है। इसके साथ ही गाँव में फुलमत के पाप की चर्चा होने लगती है। फुलमत विधवा है, किन्तु वह कुलदीप के बच्चे को जन्म दे चुकी है। इस सूचना को प्राप्त करते ही सारे ग्रामीण कर्मनाशा की बाढ़ का कारण फुलमत को समझने लगते हैं और निर्णय लेते हैं कि उसे उसके बच्चे सहित कर्मनाशा में फेंक दिया जाए। उनकी धारणा है कि उस पापिन की बलि पाकर कर्मनाशा शान्त हो जाएगी।

यह सूचना भैरो पाण्डे को भी मिलती है। वे विचलित हो उठते हैं। गाँववालों को यह ज्ञात नहीं है कि फुलमत का बच्चा कुलदीप से उत्पन्न है। भैरो पाण्डे इस क्रूरता को रोकना चाहते हैं, किन्तु सामाजिक प्रतिष्ठा के नष्ट होने एवं सामाजिक उपहास का पात्र बनने का भय उनको सत्य प्रकट करने से रोकता है। उनके मन में भावनाओं का संघर्ष होने लगता है। अन्त में सत्य एवं मानवीय भावनाओं की विजय होती है और वे कर्मनाशा के तट पर पहुँच जाते हैं, जहाँ भयभीत फुलमत अपने बच्चे को लिए ग्रामीणों से घिरी खड़ी है।

भैरो पाण्डे निर्भीक स्वर में कहते हैं कि फुलमत ने कोई पाप नहीं किया। वह उनके छोटे भाई की पत्नी है, उनकी बहू है और उसका बच्चा उसके छोटे भाई का पुत्र है। गाँव का मुखिया एवं अन्य ग्रामीण फिर भी नहीं मानते। मुखिया कहता है कि पाप का दण्ड तो भोगना ही पड़ता है। इस पर भैरो पाण्डे कठोर स्वर में कहते हैं कि यदि वे एक-एक के पापों को गिनाने लगें तो वहाँ खड़े सभी लोगों को कर्मनाशा की धारा में जाना पड़ेगा। सहमे हुए और स्तब्ध ग्रामीण अपाहिज भैरो पाण्डे के चट्टान की तरह अडिग व्यक्तित्व को देखते रह जाते हैं।

अथवा

कहानी के प्रमुख तत्त्वों के आधार पर 'पंचलाइट' कहानी का विवेचन कीजिए।

उत्तर : **'पंचलाइट' कहानी की तात्त्विक समीक्षा**

प्रस्तुत कहानी की तात्त्विक समीक्षा निम्नलिखित है—

(1) कथानक/कथावस्तु—प्रस्तुत कहानी में रेणुजी ने पेट्रोमैक्स (जिसे गाँववाले 'पंचलैट' कहते हैं) के माध्यम से ग्रामीण वातावरण का चित्रण किया है और ग्रामवासियों की मनोस्थिति की वास्तविक झलक प्रस्तुत की है। प्रस्तुत कहानी घटनाप्रधान है। महतो टोली के पंच पेट्रोमैक्स खरीद तो लाते हैं, किन्तु वे उसे जलाने की विधि नहीं जानते। उनके लिए यह अपमान की बात है कि उनका 'पंचलैट' पहली ही बार किसी दूसरी टोली के सदस्य द्वारा जलाया जाए। समस्या का समाधान मुनरी के पास है, परन्तु वह कैसे बताए? उसके प्रेमी गोधन का हुक्का-पानी पंचायत ने बन्द कर रखा है और वही 'पंचलैट' जलाना जानता है। इस समय जाति की प्रतिष्ठा का प्रश्न है; अत: गोधन को पंचायत में आने की अनुमति प्रदान कर दी जाती है। वह 'पंचलैट' को स्प्रिट के अभाव में गरी (नारियल) के तेल से ही जला देता है। अब न केवल गोधन पर लगे सारे प्रतिबन्ध हट जाते हैं, वरन् उसे मनोनुकूल आचरण की छूट भी मिल जाती है। इस प्रकार 'पंचलाइट' जलाने की समस्या और उसके समाधान के माध्यम से कहानीकार ने ग्रामीण मनोविज्ञान का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। आवश्यकता किस प्रकार बड़े-से-बड़े रूढ़िगत संस्कार और निषेध को अनावश्यक सिद्ध कर देती है, इसी केन्द्रीय भाव को इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार कहानी का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त, रोचक और जिज्ञासा उत्पन्न करनेवाला है।

शीर्षक—कहानी का शीर्षक 'पंचलाइट' ग्रामीण लोकभाषा के आंचलिक प्रभाव से युक्त तथा सम्पूर्ण कहानी के भाव को व्यक्त करनेवाला है। इस प्रकार यह कहानी ग्रामीण जीवन की सजीव झाँकी प्रस्तुत करने में समर्थ है।

(2) पात्र और चरित्र-चित्रण—प्रस्तुत कहानी चरित्रप्रधान कहानी नहीं है, इसमें आंचलिकता को ही विशेष महत्त्व दिया गया है, फिर भी कहानीकार ने कुछ पात्रों के चरित्रों की रेखाएँ उभारने का प्रयास किया है। इस कहानी में सरदार, दीवान, गुलरी काकी और फुटंगी झा एक वर्ग के पात्र हैं तथा गोधन और मुनरी दूसरे वर्ग के।

सरदार में मुखिया की सभी विशेषताएँ दर्शाई गई हैं। वह अपने प्रत्येक कथन को आदेश मानता है।

फुटंगी झा स्वभाव से विनोदी और हँसमुख हैं और दूसरों का मजाक बनानेवाले हैं।

गोधन साधारण मनचला युवक है, किन्तु पंचलाइट जलाने की विशिष्ट जानकारी के कारण वर्तमान प्रसंग में वह उपयोगी सिद्ध होता है। पंचलाइट जलाने की योग्यता के कारण उसे फिर से जाति में सम्मिलित कर लिया जाता है और गाँव में स्वच्छन्द विचरण की छूट भी मिल जाती है।

मुनरी एक साधारण ग्रामबाला है, जो गोधन से प्रभावित है। उसमें नारी-सुलभ शील और संकोच भी है। गोधन के विषय में स्वयं जानकारी देने में उसे लज्जा महसूस होती है; अत: वह अपनी बात सहेली **कनेली** के माध्यम से बताती है।

मुनरी की माँ **गुलरी काकी** परम्पराओं और रूढ़ियों की अनुयायी होते हुए भी गुणों का आदर करती है।

इस प्रकार इस कहानी के सभी पात्र सजीव प्रतीत होते हैं। कहानी में ग्रामवासियों की मनोवृत्तियों का परिचय बड़े जीवन्त और यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेखक को ग्रामीण समूह के चरित्र को उभारने में विशेष सफलता मिली है।

(3) कथोपकथन या संवाद—प्रस्तुत कहानी के संवाद संक्षिप्त, रोचक, सरल और स्वाभाविक हैं। अनावश्यक और लम्बे संवाद इस कहानी में नहीं हैं। बिहार के ग्रामीण अंचल की भाषा का प्रयोग करके संवादों की स्वाभाविकता को बढ़ाया गया है। संवादों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की अशिक्षा, रूढ़िवादिता और अज्ञानता पर प्रकाश डालकर जीवन्त वातावरण की सृष्टि की गई है। स्वाभाविक संवाद-योजना का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

मुनरी ने चालाकी से अपनी सहेली कनेली के कान में बात डाल दी—'कनेली ! .... चिगो, चिध-ऽ-ऽ, चिन .... ।' कनेली मुस्कराकर रह गई—गोधन तो बन्द है। मुनरी बोली—तू कह तो सरदार से।

'गोधन जानता है पंचलैट बालना।' कनेली बोली।

कौन, गोधन? जानता है बालना? लेकिन .... ।

इस प्रकार इस कहानी के संवाद पात्र व परिस्थितियों के अनुकूल हैं और कहानीकार ने उनका चरित्र-चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया है।

(4) भाषा-शैली—प्रस्तुत कहानी की भाषा बिहार के ग्रामीण अंचलों में बोली जानेवाली जनभाषा है। उसमें स्वाभाविकता और व्यावहारिकता का विशेष ध्यान रखा गया है। ग्रामवासी शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करते हैं। रेणुजी ने ग्रामवासियों के मुख से ग्रामीण-भाषा का ही प्रयोग कराया है। उदाहरणार्थ—

©CHITRA PRAKASHAN

''टोले की कीर्तन-मण्डली के मूलगैन ने अपने भगतिया पच्छकों को समझाकर कहा—देखो, आज पंचलैट की रोशनी में कीर्तन होगा। बेताले लोगों से पहले ही कह देता हूँ, आज यदि आखर धरने में डेढ़-बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकाट !''

रेणुजी ने प्रस्तुत कहानी में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। पूरी कहानी ग्रामीणों की अज्ञानता, अशिक्षा, रूढ़िवादिता पर व्यंग्य करती हुई आगे बढ़ती है। हास्य-व्यंग्यप्रधान शैली का एक उदाहरण इस प्रकार है—

''एक नौजवान ने आकर सूचना दी—राजपूत टोली के लोग हँसते-हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पाँच बार उठो-बैठो, तुरन्त जलने लगेगा।''

(5) देश-काल और वातावरण—रेणुजी ग्रामीण अंचल को चित्रित करने में सिद्धहस्त हैं। इस कहानी में बिहार के ग्रामीण अंचल का चित्र प्रस्तुत किया गया है। वातावरण की सजीवता पाठकों को सहज ही आकर्षित कर लेती है। 'पंचलाइट' के माध्यम से ग्रामीण वातावरण का चित्रण करते हुए ग्रामवासियों के मनोविज्ञान की वास्तविक झलक प्रस्तुत की गई है। ग्रामीणों के आचार-विचार, अन्धविश्वास और कुरीतियों का भी सजीव चित्रण हुआ है। यद्यपि कहानीकार ने वातावरण का वर्णन नहीं किया है, तथापि घटनाओं और पात्रों के माध्यम से वातावरण स्वयं जीवन्त हो उठा है।

(6) उद्देश्य—ग्रामवासी जाति के आधार पर किस प्रकार टोलियों में विभक्त हो जाते हैं और परस्पर ईर्ष्या-द्वेष के भावों से भरे रहते हैं, इसका बड़ा ही सजीव और यथार्थ चित्रण इस कहानी में किया गया है। परोक्ष रूप से रेणुजी ने ग्राम-सुधार की प्रेरणा भी दी है। इसी के साथ कहानीकार ने यह भी सिद्ध किया है कि आवश्यकता बड़े-से-बड़े संस्कार और निषेध को अनावश्यक सिद्ध कर देती है।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्डकाव्य के प्रश्न का उत्तर दीजिए— 5

(i) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर :

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य में माता कुन्ती की कर्ण से विनती का महत्त्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि इसमें माता कुन्ती और पुत्र कर्ण के अन्तर्द्वन्द्व और वात्सल्य प्रेम को बड़े मार्मिक ढंग से दर्शाया गया है। इसमें कुन्ती कर्ण के पास आकर उसके प्रति अपना ममत्व एवं पुत्र-वात्सल्य प्रकट करती है, परन्तु कर्ण अटल रहता है और किसी भी मूल्य पर दुर्योधन का साथ छोड़ने को तैयार नहीं होता।

फिर भी कुन्ती निराश नहीं हुई। उसने कर्ण की दानवीरता की प्रशंसा की और उसे अपने अंक में लेना चाहा। कर्ण माँ का प्यार पाकर पुलकित हो उठा, परन्तु साथ ही सचेत भी। वह पाण्डवों के पक्ष को ग्रहण करने को तैयार नहीं हुआ, किन्तु उसने अर्जुन को छोड़कर अन्य किसी पाण्डव को न मारने का वचन कुन्ती को दे दिया। कर्ण ने कहा कि तुम प्रत्येक दशा में पाँच पुत्रों की माता बनी रहोगी। कुन्ती निराश हो गई। कर्ण ने युद्ध समाप्त होने पर कुन्ती की सेवा करने की बात कही। अन्त में कुन्ती निराश होकर लौट गई।

अथवा

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के नायक कर्ण का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) सामाजिक विडम्बना का शिकार—कर्ण यद्यपि क्षत्रिय कुल से सम्बन्धित है, तथापि उसका पालन-पोषण सूत-परिवार में होने के कारण वह सामाजिक दृष्टि से हीन माना जाता है और उसे कदम-कदम पर अपमानित होना पड़ता है। अर्जुन को रंगशाला में द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारनेवाले कर्ण को कृपाचार्य की कूटनीतियों का शिकार होना पड़ता है और द्रौपदी-स्वयंवर में भी उसे अपमान का घूँट पीना पड़ता है।

(2) सच्चा मित्र—कर्ण दुर्योधन का सच्चा मित्र है। वह दुर्योधन के प्रति पूर्णतः कृतज्ञ है। वह श्रीकृष्ण और कुन्ती के प्रलोभनों में नहीं आता। वह स्पष्ट कह देता है कि मैं दुर्योधन को किसी भी दशा में नहीं छोड़ सकता। वह तो दुर्योधन पर सबकुछ न्योछावर करने को तत्पर रहता है—

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तोल सकता है धन?
धरती की तो क्या है बिसात?
आ जाय अगर बैकुण्ठ हाथ,
उसको भी न्योछावर कर दूँ,
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

(3) साहसी और वीर धनुर्धर—कर्ण साहसी, वीर और पराक्रमी धनुर्धर है। वह सामाजिक प्रताड़नाओं एवं बहिष्कारों को सहकर भी न तो किसी के आगे झुका है, न उसने हार मानी है। वह पूर्ण शक्ति से अपना युद्ध-कौशल दिखाता है। उसे अपने भुजबल में पूर्ण विश्वास है; यथा—

''पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से।''

(4) महादानी एवं धर्मनिष्ठ—कर्ण किसी भी याचक को अपने यहाँ से खाली हाथ नहीं लौटने देता है। यहाँ तक कि ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को वह अपने कवच-कुण्डल भी दे देता है। ये उसकी धर्मनिष्ठता, दानप्रियता एवं दृढ़ता के प्रतीक हैं। उसके विषय में प्रसिद्ध था—

रवि पूजन के समय सामने जो याचक आता था,
मुँहमाँगा वह दान कर्ण से अनायास पाता था।

(5) जाति-प्रथा के विरुद्ध विद्रोह—कर्ण जाति-प्रथा और वर्णाश्रम-व्यवस्था से बहुत ही क्षुब्ध था; क्योंकि इन्हीं के आधार पर उसे पग-पग पर प्रताड़ित किया गया था। वह मानता है—

ऊपर सिर पर कनक छत्र, भीतर काले के काले,
शरमाते हैं नहीं जगत में जाति पूछने वाले।

(6) जन्मदात्री माँ के प्रति क्षुब्ध और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त—जन्म देकर ईश्वर की कृपा और समाज की उपेक्षा पर जीने के लिए छोड़ देनेवाली माँ के प्रति उसके मन में वितृष्णा है; क्योंकि कर्ण को समाज में पग-पग पर अपमानित होना पड़ता है और यही उसके मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का कारण भी है। उसका क्षोभ और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व निम्नलिखित पंक्तियों से स्पष्ट झलकता है—

जो जनकर पत्थर हुई जाति के भय से,
सम्बन्ध तोड़ भागी दुधमुँहे तनय से।
मर गई नहीं वह स्वयं मार सुत को ही,
जीना चाहा बन कठिन क्रूर निर्मोही।
क्या कहूँ देवि! मैं तो ठहरा अनचाहा,
पर, तुमने माँ का खूब चरित्र निबाहा।

(7) अडिग निष्ठा/सच्चा गुरुभक्त—कर्ण अपने गुरु परशुराम की निन्दा को नहीं सुन सकता। गुरु के शाप को भी वह बड़ी श्रद्धा से स्वीकार करता है—

''छूकर उनका चरण कर्ण ने अर्घ्य अश्रु का दान किया।''

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कर्ण का चरित्र दिव्य एवं उच्च संस्कारों से युक्त है, जो मानवता का पोषक है। संघर्षों के मध्य वह मित्रता की आन को निभाता है। वास्तव में उसके चरित्र में सच्ची मैत्री की अडिग निष्ठा विद्यमान है।

(ii) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर :

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(अ) भावपक्षीय विशेषताएँ

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की भावपक्ष सम्बन्धी विशेषताएँ अग्रलिखित हैं—

©CHITRA PRAKASHAN

(1) मार्मिकता—खण्डकाव्य में अनेक मार्मिक घटनाओं का संयोजन किया गया है। हर्षवर्धन की माता यशोमती के चितारोहण, राज्यवर्धन की वैराग्य हेतु तत्परता, राज्यश्री के विधवा होने पर हर्ष की व्याकुलता, राज्यश्री द्वारा आत्मदाह के समय हर्षवर्धन के मिलन का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत खण्डकाव्य में हुआ है।

(2) प्रकृति-चित्रण—'त्यागपथी' में कवि ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का अवसरानुरूप मनोहारी चित्रण किया है। आखेट के समय हर्षवर्धन को राजा के रोगग्रस्त होने का समाचार प्राप्त होता है। वे तुरन्त राजमहल को लौट आते हैं। उस समय के वन की प्रकृति का एक दृश्य द्रष्टव्य है—

वन-पशु अविरत, खर-शर-वर्णन से अकुलाए,
फिर गिरि-श्रेणी में खोहों से बाहर आए।

(3) रस-निरूपण—'त्यागपथी' में कवि ने करुण, वीर, रौद्र, शान्त आदि रसों का मर्मस्पर्शी निरूपण किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

(क) करुण रस—**मुझ मन्द पुण्य को छोड़ न माँ तुम भी जाओ,**
छोड़ो विचार यह, मुझे चरण से लिपटाओ।

(ख) वीर रस— **कन्नौज-विजय को वाहिनी सत्वर,**
गुंजित था चारों ओर युद्ध का ही स्वर।

(ब) कलापक्षीय विशेषताएँ

'त्यागपथी' खण्डकाव्य की कलागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) भाषा-शैली—'त्यागपथी' की भाषा तत्सम शब्दों से परिपूर्ण है। हर्ष के ज्ञान, मानव-प्रेम, निष्काम कर्म, त्याग और अहिंसा आदि आदर्शों को प्रस्तुत करने के लिए भाषा का तत्सम रूप अनिवार्य था। ऐसे स्थलों पर शैली के अनुरूप गम्भीरता और विशिष्टता का सृजन तत्सम भाषा द्वारा ही सम्भव था। वस्तुत: त्यागपथी की भाषा सांस्कृतिक आभिजात्य से परिपूर्ण है; यथा—

(क) **था वस्त्र-कर्मान्तिक सजल-दृग आ गया वल्कल लिए।**
(ख) **जन-जन वहाँ था, साश्रु, जब वल्कल उन्हीं ने ले लिए।**

(2) अलंकार-योजना—प्रस्तुत खण्डकाव्य में उत्प्रेक्षा, उपमा एवं रूपक आदि अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग किए गए हैं—

(क) **थी दीप्त उनकी शीर्ष-मणियों में उदय की लालिमा,**
पीने चली ज्यों बाल-रवि का तेज उनकी अग्निमा।

(ख) **था धूसरित आकाश सारा म्लान उड़ती धूल से,**
था अस्त असमय सूर्य भी पथ-रेणु-सरित अकूल में।

(3) छन्द-योजना—सम्पूर्ण 'त्यागपथी' खण्डकाव्य छब्बीस मात्राओं के गीतिका छन्द में रचित है। पाँचवें सर्ग के अन्त में घनाक्षरी का प्रयोग हुआ है। यह रचना की समाप्ति का सूचक ही नहीं, वरन् वर्णन की दृष्टि से प्रशस्ति का सूचक भी है।

(4) संवाद-शिल्प—'त्यागपथी' खण्डकाव्य में कवि ने सरल, मार्मिक एवं प्रवाहपूर्ण संवादों का समावेश करके अपनी काव्य और नाट्य-कुशलता का परिचय दिया है। अनेक स्थानों पर काव्य-नाटिका जैसा आनन्द प्राप्त होता है—

''संवाद यदि कोई मिला हो आपको उसका कहीं,
कृष्ण बताएँ—मैं इसी क्षण खोजने जाऊँ वहीं।''
बोले श्रमण उद्विग्न-मन दुर्भाग्य-गाथा सुन सभी
''संवाद ऐसा तो नहीं अब तक मिला कोई कभी।''

अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'राज्यश्री' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर राज्यश्री का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर राज्यश्री के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) आदर्श नारी—राज्यश्री आदर्श पुत्री, बहन एवं पत्नी के रूप में हमारे सम्मुख आती है। माता-पिता की यह लाड़ली बेटी जब विधवा होती है तो कैद कर ली जाती है, परन्तु भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के समाचार से पीड़ित होकर कैदखाने से भाग निकलती है। वन में भटकती हुई वह अग्नि-प्रवेश को उद्यत होती है, परन्तु शीघ्र ही भाई हर्ष द्वारा आकर बचा ली जाती है। भाई हर्ष द्वारा बाद में राज्य सौंपे जाने पर भी वह उस राज्य को स्वीकार नहीं करती और तन-मन से प्रजा की सेवा में लग जाती है। यही है उसका आदर्श रूप, जो सबको आकर्षित कर लेनेवाला है—

विपुल साम्राज्य की अग्रज सहित वह शासिका थी,
अभ्यन्तर से तथागत की अनन्य उपासिका थी।

(2) धर्मपरायणा एवं त्यागी-तपस्विनी—तथागत (बुद्ध) की सुपावन प्रेरणा प्राप्त करके राज्यश्री अपने मन, वचन और आत्मा से उनकी शरण में चली जाती है। उसने राज्य-वैभव का परित्याग करके कठोर संयम एवं नियम का मार्ग स्वीकार कर लिया है। इस सन्दर्भ में कवि कहता है—

नहीं कम राज्यश्री है आज आश्रमवासिनी से,
नहीं है त्याग उसका कम किसी संन्यासिनी से।

माघ-मेले में प्रत्येक पाँचवें वर्ष वह सर्वस्व दान देती है—

लुटाती थी बहन भी पास का सब तीर्थ-स्थल में,
पहिन दो वस्त्र केवल दीपती थी छवि विमल में।

(3) देशभक्त एवं जनसेविका—राज्यश्री जनसेवा का व्रत लेती है और इस व्रत को पूर्ण करके वह अपनी देशभक्ति का परिचय देती है। वह प्रतिज्ञा करती है कि अपने भाई हर्ष के साथ वह भी सदा देशसेवा में लगी रहेगी—

''करूँगी साथ उनके मैं हमेशा राष्ट्र-साधन।''

(4) सुशिक्षिता एवं शास्त्र-ज्ञान से सम्पन्न—राज्यश्री सुशिक्षिता एवं शास्त्रों के ज्ञान से सम्पन्न है। आचार्य दिवाकर मित्र संन्यास-धर्म का तात्त्विक विवेचन करते हुए उसे मानव-कल्याण के कार्यों में लगने का उपदेश देते हैं। राज्यश्री इसे स्वीकार कर लेती है और आचार्य की आज्ञा का पूर्णरूपेण पालन करती है।

इस प्रकार राज्यश्री एक ऐसी आदर्श भारतीय नारी है, जो त्याग, तपस्या, कर्त्तव्यनिष्ठा, धर्मपरायणता और जनसेवा जैसे पवित्र भावों से सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

कवि ने 'त्यागपथी' की भूमिका में स्पष्ट लिखा है—**''राज्यश्री एक आदर्श राजकुमारी थी, जिसने पूर्ण पवित्रता और सात्त्विकता के साथ अपना जीवन बिताया। ....खण्डकाव्य में हर्ष के समानान्तर ही राज्यश्री का विमल चरित्र भी उन सब आदर्शों से अनुप्रेरित होकर चित्रित हुआ है।''**

© CHITRA PRAKASHAN

(iii) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर उसके नायक का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर :

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के नायक श्रवण कुमार का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत खण्डकाव्य में श्रवण कुमार की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार प्रस्तुत हुई हैं—

(1) मातृ-पितृ-भक्त—श्रवण कुमार एक आदर्श पुत्र है। वह अपने माता-पिता को ही परमेश्वर मानकर पूजता है। प्रात:काल से ही वह माता-पिता की सेवा प्रारम्भ कर देता है। काँवर में बैठाकर वह उन्हें देवगृहों और विभिन्न तीर्थों की यात्रा कराता है—

बिठलाकर उनको काँवर में, करता वह गुरु भार वहन।
देवगृहों, तीर्थों को जाता, सदा कराने शुभ दर्शन॥

दशरथ के बाण से आहत होकर भूमि पर पड़ा हुआ भी श्रवण कुमार अपने माता-पिता के प्यासे होने की चिन्ता करता रहता है।

(2) सत्यवादी—श्रवण की माता शूद्र व पिता वैश्य थे। दशरथ द्वारा ब्रह्महत्या की सम्भावना प्रकट करने पर श्रवण कुमार उनको स्पष्ट बता देता है कि वह ब्रह्मकुमार नहीं है—

''वैश्य पिता, माता शूद्रा थी, मैं यों प्रादुर्भूत हुआ।''

(3) संस्कारों को महत्त्व देनेवाला—श्रवण कुमार किसी के भी प्रति भेदभाव नहीं रखता। वह सच्चे अर्थों में समदर्शी है। वह कर्म, शील एवं

संस्कारों को महत्त्व देता है। वह अपने जीवन की पवित्रता का रहस्य, संस्कारों के प्रभाव को ही मानता है—

''संस्कारों के सत् प्रभाव से, मेरा जीवन पूत हुआ।''

वह आगे कहता है—

विप्र द्विजेतर के शोणित में, अन्तर नहीं, रहे यह ध्यान।
नहीं जन्म से, संस्कार से, मानव को मिलता सम्मान।।

(4) सरल स्वभाव एवं क्षमाशील—श्रवण कुमार स्वभाव से सरल है। उसके मन में किसी के प्रति ईर्ष्या या द्वेष का भाव नहीं है। दशरथ के बाण से घायल होने पर भी, पास आए हुए दशरथ का वह सम्मान करता है।

(5) भाग्यवादी—श्रवण कुमार पूर्णत: भाग्यवादी है। किसी भी अच्छी-बुरी घटना को वह भाग्य का ही खेल मानता है। बाण से घातक रूप से घायल होने को भी वह भाग्य का दोष मानता है। वह कहता है—

''जो भवितव्य वही होता है, उसे सका कब कोई टाल।''

(6) आत्म-सन्तोषी—श्रवण का जीवन के प्रति कोई मोह नहीं है। वह स्वभाव से ही सन्तोषी है। उसे भोग व ऐश्वर्य की लेशमात्र भी कामना नहीं है। उसके मन में किसी को पीड़ा पहुँचाने का भाव ही जाग्रत नहीं होता। उसका कथन है—

वन्य पदार्थों से ही होता
रहता, मम जीवन-निर्वाह।
ऋषि हूँ, नहीं किसी को पीड़ा
पहुँचाने की उर में चाह।।

श्रवण कुमार के चरित्र में मानवता के सभी उच्च आदर्शों का समन्वय हुआ है। वह सत्यवादी, क्षमाशील, सन्तोषी, सरल स्वभाववाला, मातृ-पितृभक्त, दयालु, त्यागी, तपस्वी, भाग्यवादी एवं भारतीय संस्कृति का प्रतीक है।

अस्तु; 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य का नायक भारतीय सदाचार और मर्यादा का ज्वलन्त आदर्श है।

अथवा

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'अभिशाप' सर्ग की कथावस्तु लिखिए।

उत्तर :

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के 'अभिशाप' सर्ग की कथावस्तु

'श्रवण कुमार' का सप्तम सर्ग 'अभिशाप' सबसे वृहद् एवं महत्त्वपूर्ण है। इसमें करुण रस के सभी अंगों की सहज अभिव्यक्ति हुई है। यही इस सर्ग का वैशिष्ट्य भी है। श्रवण के शव, उसके माता-पिता के मनोभावों, पूर्व स्मृतियों एवं शव-स्पर्श, शीश-पटकना, रोना आदि में आलम्बन, उद्दीपन एवं अनुभाव के दर्शन होते हैं। प्रलाप, चिन्ता, स्मरण, गुणकथन और अभिलाषा आदि वृत्तियों की सहायता से शोक की करुण रस में परिणति इस सर्ग में द्रष्टव्य है। इस सर्ग का कथासार इस प्रकार है—

श्रवण के माता पिता पुत्र-शोक से व्याकुल थे। वे करुण विलाप करते हुए, आँसू बहाते हुए, दशरथ के साथ सरयू नदी पर पहुँचे। पुत्र के शरीर को छूकर दोनों मूर्च्छित हो गए। चेतना आने पर वे तरह-तरह से विलाप करने लगे। राजा दशरथ को सम्बोधित करते हुए श्रवण के पिता ने कहा, ''हे राजन्! यदि तुम जानबूझकर यह कृत्य करते तो पूरा रघुकुल ही दण्ड भोगता, परन्तु यह सबकुछ तुमसे अनजाने में ही हुआ है; अत: केवल तुम अकेले ही इसका दण्ड भोगोगे।'' उन्होंने दशरथ को शाप दिया कि जिस प्रकार पुत्र-शोक में मैं प्राण त्याग रहा हूँ ; इसी प्रकार हे दशरथ! एक दिन तुम भी पुत्र-वियोग में तड़प-तड़पकर अपने प्राण त्यागोगे। दशरथ इस शाप को सुनकर काँप उठे।

(iv) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर :

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना

अंग्रेज शासकों ने नमक पर कर बढ़ा दिया था। महात्मा गांधी ने उसका डटकर विरोध किया। गांधीजी ने नमक कानून तोड़ने व सत्याग्रह के लिए साबरमती आश्रम से 240 मील की दूरी पर समुद्र-तट पर स्थित 'डाण्डी' ग्राम को चुना। वहाँ पहुँचकर उन्होंने समुद्र के पास से नमक उठाकर 'नमक कानून' भंग किया। गांधीजी का उद्देश्य नमक बनाना नहीं था, वे तो इस कानून का विरोध और जनता में चेतना उत्पन्न करना चाहते थे। वे शासन का विरोध करके भारतीयों का आह्वान स्वतन्त्रता-प्राप्ति के महान् यज्ञ हेतु करना चाहते थे।

गांधीजी ने जन-जागरण के उद्देश्य से 'डाण्डी' ग्राम तक पैदल जाने का निश्चय किया। वे 24 दिन की पैदल यात्रा के बाद 'डाण्डी' ग्राम पहुँचे—

वह चौबीस दिनों का पथ व्रत,
दो सौ मील किए पद पावन।
स्थल-स्थल पर रुक, पा जन पूजन,
दिया दीप्त सत्याग्रह दर्शन!

गांधीजी का यह कार्य 'डाण्डी-यात्रा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गांधीजी का डाण्डी-सत्याग्रह सफल हुआ और अंग्रेज शासकों को नमक कानून हटाना पड़ा।

अथवा

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण

(1) सत्य-अहिंसा के पुजारी—महात्मा गांधी ने संसार के सम्मुख सत्य और अहिंसा का अभिनव प्रयोग किया। उनका दृढ़-विश्वास था कि बिना रक्तपात के भी स्वतन्त्रता देवी का स्वागत किया जा सकता है। इसके बल पर ही उन्होंने भारत से शक्तिशाली ब्रिटिश सत्ता के पैर उखाड़ दिए। सत्य और अहिंसा का प्रयोग उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध ही नहीं किया, अपितु इन सिद्धान्तों को अपने व्यक्तिगत जीवन में भी अक्षरश: उतारा।

(2) साहसी एवं दृढ़निश्चयी—महात्मा गांधी अपने निश्चय पर दृढ़ रहनेवाले एवं साहसी व्यक्ति थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के नमक कानून को तोड़ने हेतु अपने अद्भुत साहस का प्रदर्शन किया। वे अंग्रेजी सत्ता के क्रूर दमन-चक्र से तनिक भी विचलित नहीं हुए—

वीरोचित वर आवेशों से
सुलग रहा था बापू का मन!

'डाण्डी-यात्रा' के समय उनके दृढ़-निश्चय एवं अपूर्व साहस के दर्शन होते हैं—

प्राण त्याग दूँगा पथ पर ही,
उठा सका मैं यदि न नमक कर।
लौट न आश्रम में जाऊँगा,
जो स्वराज्य ला सका नहीं घर।

(3) महान् जननायक—गांधीजी भारतीय जनता के सच्चे नेता थे। उनका भारतीय जनता के हृदय पर पूर्ण राज्य था। भारत की जनता ने उनके नेतृत्व में ही स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों को यहाँ से भगाकर ही दम लिया—

लोक प्रगति का देवदूत वह,
तीस कोटि का रहा कृतीजन।
विश्व चमत्कृत सोच रहा था,
क्या भारत की सिद्धि साध्य धन?

(4) मानवीय गुणों से युक्त—गांधीजी में दया, करुणा, त्याग, इन्द्रिय-संयम, मानवता के प्रति प्रेम, विश्व-बन्धुत्व एवं वीरता के गुण कूट-कूटकर भरे हुए थे—

लिए अहिंसा युग के तन वह
खड़े सत्य वट नीचे निर्भय
स्फटिक शुभ्र स्वर में पुकारते
चलता धरती पर अरुणोदय।

© CHITRA PRAKASHAN

(5) समदर्शी—गांधीजी की दृष्टि में न कोई छोटा था, न अस्पृश्य और न ही तुच्छ। वे सभी को समान दृष्टि से देखते थे। अस्पृश्यता के निवारण हेतु उन्होंने आन्दोलन भी चलाया—

छुआछूत का भूत भगाने
किया व्रती ने दृढ़ आन्दोलन,
हिले द्विजों के रुद्ध हृदय पट,
खुले मन्दिरों के जड़ प्रांगण।

(6) अहिंसक मानवतावादी—'मुक्तियज्ञ' के गांधी अहिंसक मानवतावादी थे। उनका विश्वास था कि हिंसा से हिंसा और घृणा से घृणा पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। वे परस्पर प्रेम उत्पन्न कर इस घृणा एवं हिंसा को दूर करना चाहते थे। वे हिंसा का प्रयोग करके स्वतन्त्रता भी नहीं चाहते थे; क्योंकि उन्हें सन्देह था कि ऐसी स्वतन्त्र भूमि मानवता से रहित होगी—

घृणा, घृणा से नहीं मरेगी,
बल प्रयोग पशु साधन निर्दय।
हिंसा पर निर्मित भू-संस्कृति,
मानवीय होगी न, मुझे भय।

महात्मा गांधी महान् राष्ट्रनायक, स्वतन्त्रता के पुजारी, सत्य और अहिंसा की मूर्ति, निर्भीक, साहसी, दृढ़प्रतिज्ञ एवं संयमी व्यक्ति थे। प्रस्तुत खण्डकाव्य के गांधीजी के व्यक्तित्व से सम्बन्धित गुणों की तुलना उनके परम्परागत मान्य स्वरूप से करने पर ज्ञात होता है कि उनमें सभी लोक-कल्याणकारी गुणों का समावेश करते हुए कवि ने उनके चरित्र को एक नया स्वरूप प्रदान किया है, जो अधिक प्रखर एवं प्रकाशवान् है।

(v) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र द्रौपदी का चरित्र-चित्रण

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर द्रौपदी की चरित्रगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) स्वाभिमानिनी—द्रौपदी एक वीरांगना है; अत: उसमें स्वाभिमान की उदात्त भावना का होना स्वाभाविक है। उसे अपमान सह्य नहीं है। वह नारी के स्वाभिमान को ठेस पहुँचानेवाली किसी भी बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। अपने स्वाभिमान के कारण ही अपनी रक्षा के लिए वह स्वयं को समर्थ मानती है। वह दु:शासन को ललकारती हुई कहती है—

मौन हो जा, मैं सह सकती न
कभी भी नारी का अपमान।

(2) सत्यनिष्ठ एवं न्यायप्रिय—द्रौपदी सत्य और न्याय के प्रति पूर्णत: निष्ठावान् है। वह अपने प्राण देकर भी न्याय और सत्य का पालन करने की पक्षधर है। जब दु:शासन पाशविक बल का प्रदर्शन कर द्रौपदी के सत्य एवं शील का हरण करना चाहता है तो वह दु:शासन को ललकारती हुई कहती है—

न्याय में रहा मुझे विश्वास,
सत्य में शक्ति अनन्त महान।
मानती आई हूँ मैं सतत,
''सत्य ही है ईश्वर, भगवान्॥''

(3) वाक्पटु—द्रौपदी के कथन उसकी वाक्पटु एवं योग्यता के परिचायक हैं। चीर-हरण के समय कौरवों की सभा में वह अकाट्य तर्क प्रस्तुत करके सभी सभासदों को निरुत्तर कर देती है। वह दु:शासन से न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म आदि पर विवाद करती है। उसके वाक्चातुर्य का एक उदाहरण देखिए—

पूछती हूँ मैं केवल एक प्रश्न, उसका उत्तर मिल जाय।
करूँगी फिर जो हो आदेश, बड़ों का वचन मानकर न्याय॥
प्रथम महाराज युधिष्ठिर मुझे, या कि थे गए स्वयं को हार।
स्वयं को यदि, तो उनको मुझे, हारने का था क्या अधिकार?

(4) नारी-जाति का आदर्श—द्रौपदी सम्पूर्ण नारी-जाति के लिए एक आदर्श है। दु:शासन नारी को केवल वासना एवं भोग की वस्तु कहता है तो वह बताती है कि नारी वह शक्ति है, जो विशाल चट्टान को भी हिला देती है। यद्यपि वह कली के समान कोमल है, परन्तु पापियों के संहार के लिए वह भैरवी भी बन सकती है। वह नारी-जाति के लिए गौरव की घोषणा करती है—

पुरुष के पौरुष से ही सिर्फ,
बनेगी धरा नहीं यह स्वर्ग।
चाहिए नारी का नारीत्व,
तभी होगा यह पूरा सर्ग॥

(5) निर्भीक एवं साहसी—द्रौपदी के बाल खींचकर दु:शासन उसे भरी सभा में ले आता है और उसे अपमानित करना चाहता है, परन्तु द्रौपदी बड़े साहस एवं निर्भीकता के साथ दु:शासन को निर्लज्ज और पापी कहकर पुकारती है—

अरे ओ ! दु:शासन निर्लज्ज !
देख तू नारी का भी क्रोध।
किसे कहते उसका अपमान
कराऊँगी मैं इसका बोध॥

(6) सती-साध्वी धर्मनिष्ठ नारी—कवि ने द्रौपदी के चरित्र को एक भारतीय सती-साध्वी नारी के आदर्श चरित्र के रूप में चित्रित किया है, जो भारत-माता का प्रतीक है। कवि ने द्रौपदी के चरित्र के माध्यम से सत्य, न्याय, धर्म, विवेक, समता और समष्टि आदि मानवीय आदर्शों को भली प्रकार उजागर किया है। द्रौपदी के रूप में भारत-माता की प्रतिमा साकार हो उठी है। द्रौपदी के गुण, शील एवं धर्मनिष्ठा की प्रशंसा स्वयं धृतराष्ट्र को भी करनी पड़ती है—

द्रौपदी धर्मनिष्ठ है, सती-
साध्वी, सत्य-न्याय साकार।
इसी से आज सभी से प्राप्त
उसे बल, सहानुभूति अपार॥

सार रूप में कहा जा सकता है कि द्रौपदी पाण्डव-कुलवधू, वीरांगना, स्वाभिमानी, आत्मगौरव-सम्पन्न, सत्य और न्याय की पक्षधर, सती-साध्वी, नारीत्व के स्वाभिमान से मण्डित एवं नारी-जाति का आदर्श है।

अथवा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की विशेषताएँ संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की विशेषताएँ

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की भावात्मक एवं कलात्मक विशेषताओं का आकलन इस प्रकार किया जा सकता है—

(अ) भावपक्षीय विशेषताएँ

प्रस्तुत खण्डकाव्य का वैशिष्ट्य इसके घटना-विस्तार की अपेक्षा उसकी विचार-सम्पदा में निहित है। इसकी भावपक्षीय विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) विचार-बिन्दु—इस खण्डकाव्य में निम्नांकित विचार-बिन्दु परिलक्षित होते हैं—

(क) आधुनिक युग नारी-जागरण का युग है। द्रौपदी के माध्यम से इस काव्य में पग-पग पर आज की जाग्रत नारी ही बोल रही है।

(ख) कवि का विचार है कि शस्त्र की अपेक्षा शास्त्रों में वर्णित लोकमंगल के मूल्य अधिक महत्त्वपूर्ण होने चाहिए और शक्ति का उपयोग युद्ध के लिए नहीं, अपितु शान्ति एवं विकास-कार्यों के लिए होना चाहिए।

(ग) सच्चे सांस्कृतिक विकास और लोकमंगल के लिए जीवन में सत्य, न्याय, प्रेम, करुणा, शील, क्षमा, सहानुभूति, श्रद्धा और सेवा आदि मानवीय मूल्यों का विकास आवश्यक है।

(2) उदात्त आदर्शों का स्वर—प्रस्तुत खण्डकाव्य के सम्पूर्ण भावात्मक क्षेत्रों से नारियों के प्रति श्रद्धा, विनाशकारी आचरण एवं शस्त्रों के अंगीकरण का विरोध, प्रजातान्त्रिक आदर्शों, असत्य की आन्तरिक

© CHITRA PRAKASHAN

निर्बलता एवं सत्य के आत्मबल की शक्ति का स्वर मुखरित होता है। कवि ने इस खण्डकाव्य में द्रौपदी के चीर-हरण को प्रसंग बनाकर उदात्त आदर्शों की भावधारा प्रवाहित की है। यह भावधारा ही इस खण्डकाव्य की आत्मा है।

(3) रस-योजना—प्रस्तुत खण्डकाव्य में वीर एवं रौद्र रस की प्रधानता है। सम्पूर्ण खण्डकाव्य में ओज गुण की प्रधानता भी दिखाई देती है। इस खण्डकाव्य का विषय एवं भाव नारी के शक्ति-रूप को चित्रित करना है; अत: उसके अनुरूप यथास्थान वीर एवं रौद्र रस की योजना की गई है।

(ब) कलापक्षीय विशेषताएँ

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में कलापक्ष से सम्बन्धित निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं—

(1) भाषा-शैली—प्रस्तुत खण्डकाव्य न घटनाप्रधान है और न भावप्रधान, अपितु वर्तमान युग की विचारशीलता के अनुरूप यह एक विचारप्रधान रचना है; अत: अपनी प्रबुद्ध विचारधारा को अधिकाधिक प्रभावशाली बनाने के लिए इसके रचयिता ने इसे अत्यन्त सरल, प्रवाहपूर्ण और प्रसादगुणसम्पन्न खड़ीबोली हिन्दी में लिखा है। इसकी भाषा में न तो अलंकरण की प्रवृत्ति है और न कृत्रिमता की; यथा—

सह सका भरी सभा के बीच नहीं वह अपना यों अपमान।
देख नर पर नारी का वार एकदम गरज उठा अभिमान॥

इस काव्य की भाषा की दूसरी उल्लेखनीय विशेषता यह है कि वह बड़ी ओजपूर्ण है। द्रौपदी इसकी प्रमुख स्त्री-पात्र है। वह महाभारत की दीन एवं कुण्ठित द्रौपदी की तुलना में सर्वथा भिन्न दर्शाई गई है। वह सिंहनी-सी निर्भीक, दुर्गा-सी तेजस्विनी और दीपशिखा-सी आलोकमयी है। दूसरी ओर इस काव्य के पुरुष-पात्रों में दु:शासन प्रमुख है। उसमें पौरुष का अहं है और भौतिक शक्ति का दम्भ भी; अत: कवि ने इन दोनों पात्रों के व्यक्तित्व एवं विचारों के अनुरूप ही इस काव्य की भाषा को आदि से अन्त तक अत्यन्त वेगपूर्ण एवं ओजस्वी रूप प्रदान किया है; यथा—

सिंहनी ने कर निडर दहाड़, कर दिया मौन सभा का भंग।
शब्द-बाणों से क्षत हो, लगा फड़कने दु:शासन का अंग॥

(2) संवाद-योजना एवं नाटकीयता—प्रस्तुत खण्डकाव्य में व्यंजनाप्रधान संवादात्मक एवं नाटकीय शैली का प्रयोग किया गया है। संवादों पर आधारित कथा की प्रगति शैली की प्रमुख विशेषता है—

"द्रौपदी बढ़-बढ़ कर मत बोल"
कहा उसने तत्क्षण तत्काल।
पीट मत री नारी का ढोल,
उगल मत व्यर्थ अग्नि की ज्वाल॥

(3) अलंकार-योजना—प्रस्तुत खण्डकाव्य में उत्प्रेक्षा, उपमा एवं रूपक आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है। अनुभावों की चित्रोपमता की सजीव योजना की गई है—

और वह मुख! प्रज्वलित प्रचण्ड
अग्नि का खण्ड, स्फुलिंग का कोष।

इस प्रकार प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु खण्डकाव्य के अनुरूप अत्यन्त लघु रखी गई है। इसमें कथा का संगठन अत्यन्त कुशलता से किया गया है। द्रौपदी इसकी मुख्य पात्र है, जिसका चरित्र आदर्शमय है। वह नारी के अन्याय के प्रति संघर्षशील रूप में सामने आती है। इस प्रकार 'सत्य की जीत' को एक सफल खण्डकाव्य कहना सर्वथा उपयुक्त है।

(vi) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : **'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ**

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य की भाव एवं कलापक्ष सम्बन्धी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) भावपक्षीय विशेषताएँ

(1) वर्णनात्मकता में भावात्मकता—खण्डकाव्य के शिल्प के अनुसार 'आलोक-वृत्त' की कथा वर्णनात्मक है। वर्णनात्मक स्थलों को कवि ने भावात्मक स्वरूप देने का पूरा-पूरा प्रयास किया है। मार्मिक स्थलों के चयन में कवि की प्रतिभा एवं सहृदयता भी पूरी तरह परिलक्षित होती है।

(2) आदर्श भावों की अभिव्यंजना—सम्पूर्ण खण्डकाव्य में राष्ट्रभक्ति, सत्य, अहिंसा, मानवीय भावनाओं, त्याग आदि का भाव मुखरित होता है। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व में इन्हीं आदर्श गुणों का आलोक प्रकाशित होता है।

(3) रस-योजना—खण्डकाव्य में किसी विशेष रस का परिपाक हो, यह आवश्यक नहीं है। उसमें किसी उदात्त भाव को चरम सौन्दर्य पर दिखाया जा सकता है। 'आलोक-वृत्त' में वीर, शान्त और करुण आदि रसों की मार्मिक अभिव्यंजना हुई है।

(ब) कलापक्षीय विशेषताएँ

(1) भाषा-शैली—'आलोक-वृत्त' की भाषा अत्यन्त ललित और चित्ताकर्षक है। भाषा विचारों और भावों को मन तक पहुँचाने में पूरी तरह समर्थ है। ओज गुण का निर्वाह आद्योपान्त किया गया है, परन्तु जिन प्रसंगों में माधुर्य की अपेक्षा है; वहाँ भाषा अत्यन्त मधुर रूप ग्रहण कर लेती है। प्रसाद गुण तो इसकी प्रत्येक पंक्ति में देखा जा सकता है। माधुर्य का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

प्रिय की अनुगामिनी, कामिनी, पावन शोभा वाली।
नई कोंपलों से मण्डित जैसे रसाल की डाली॥

'आलोक-वृत्त' की शैली प्रमुख रूप से वर्णनात्मक है। यत्र-तत्र संवादात्मकता भी दृष्टिगत होती है। कथावस्तु के विस्तृत स्वरूप को देखते हुए कवि ने इस शैली को अपनाया है, किन्तु इस वर्णनात्मक शैली में भावात्मकता को स्थान देकर उन्होंने भावों को कुशल अभिव्यक्ति दी है।

(2) अलंकार-योजना—'आलोक-वृत्त' में अलंकारों का प्रयोग अत्यन्त संयमित रूप में हुआ है। कहीं पर भी वे सप्रयास लाए हुए प्रतीत नहीं होते। अलंकारों ने कहीं पर भी भाव और भाषा को बोझिल नहीं किया है। एक उदाहरण देखिए—

घोर निराशा में आशा की वीर टेरते तान चले,
तम-तमाल पर तरुण तरणि का जैसे किरण-कृपान चले।

(3) छन्द-योजना—'आलोक-वृत्त' में छन्दों की विविधता है। 16 मात्राओं के छोटे छन्द से लेकर 32 मात्राओं के लम्बे छन्दों का प्रयोग इसमें सफलतापूर्वक किया गया है। प्रथम सर्ग में मुक्त छन्द का प्रयोग हुआ है। सर्गों के मध्य में गीत-योजना भी की गई है, जिससे राष्ट्रीय भावनाओं की वृद्धि में सहयोग मिला है।

इस प्रकार यह द्रष्टव्य है कि 'आलोक-वृत्त' में गांधीजी जैसे महान् लोकनायक के गुणों को आधार बनाकर काव्य-रचना की गई है। कथा की पृष्ठभूमि विस्तृत है, किन्तु कवि ने गांधीजी की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करने हेतु आवश्यक प्रसंगों का चयन कर उसे इस प्रकार संगठित एवं विकसित किया है कि वह खण्डकाव्य के उपयुक्त बन गई है। गौण पात्रों का चित्रण नायक के चरित्र की विशेषताओं को प्रकाशित करने हेतु किया गया है। आदर्शपूर्ण भावनाओं की स्थापना हेतु रचित इस काव्य-ग्रन्थ में यद्यपि रसों एवं छन्दों की विविधता है; तथापि इससे खण्डकाव्य के उद्देश्य एवं उसके विधा सम्बन्धी तत्त्वों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता; अत: इस काव्यग्रन्थ को एक सफल खण्डकाव्य कहना उपयुक्त होगा।

अथवा

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर : **'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण**

गांधीजी के लोकनायक चरित्र की विशेषताओं को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

(1) देशप्रेमी—गांधीजी अपने देश (मातृभूमि) से इतना प्रेम करते थे कि उन्होंने अपना तन-मन-धन अर्थात् सर्वस्व देशोद्धार के लिए अर्पित कर दिया।

© CHITRA PRAKASHAN

(2) सत्य और अहिंसा के उपासक—गांधीजी ने अपने जीवन में सत्य और अहिंसा को सर्वोपरि महत्त्व दिया। वे अहिंसा को महान् शक्तिशाली अस्त्र मानते रहे। अहिंसा व्रत का पूर्ण पालन कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है। उन्होंने अपने जीवन में हिंसा न करने का दृढ़-निश्चय किया—

मुँह से उफ तक किए बिना,
अधिकारों के हित अड़ना है।
नहीं आदमी से, उसकी
दुर्बलताओं से लड़ना है।

(3) पुरुषार्थ एवं ईश्वर के प्रति आस्थावान्—गांधीजी पुरुषार्थ को भाग्य से ऊपर मानते थे। उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर ही ब्रिटिश राज्य की नींव हिला दी। वे ईश्वर के प्रति सदा आस्थावान् बने रहे। उन्होंने जो कुछ भी किया, ईश्वर को साक्षी मानकर ही किया। उनकी दृष्टि में साधन पवित्र होने चाहिए, परिणाम ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा—

क्या होगा परिणाम सोच लूँ ,
पर क्यों सोचूँ, वह तो।
मेरा क्षेत्र नहीं, स्त्रष्टा का,
जो प्रभु करे वही हो॥

(4) सदाचरण एवं मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठावान्—गांधीजी ने अपने जीवन में मानवीय मूल्यों एवं सदाचरण को सदैव बनाए रखा। उनके हृदय में मानवमात्र के प्रति ही नहीं, प्राणिमात्र के प्रति भी समभाव था। उनके अनुसार जाति, धर्म, वर्ण एवं रूप आदि के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। वे पाप से घृणा करने की बात कहते थे, पापी से नहीं।

(5) जनतन्त्र में आस्था—गांधीजी मानव-मानव में समता का भाव आवश्यक ही नहीं, वरन् अनिवार्य भी मानते थे। उनके अनुसार लोकतन्त्र (जनतन्त्र) ही मानव-भावना का सच्चा प्रतीक है तथा लोकतन्त्र में ही सभी के हित सुरक्षित रहते हैं। कवि कहता है—

लोकतन्त्र का रथ समता के पहियों पर चलता है।
मन्दिर कोई भी हो सब में, दीप वही जलता है॥

(6) राष्ट्रीय एकता के पक्षधर—गांधीजी ने भारत की समग्र जनता को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए जीवनपर्यन्त प्रयास किया।

(7) भावात्मक एकता से ओत-प्रोत—गांधीजी 'विश्वबन्धुत्व' एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत-प्रोत थे। वे सभी को सुखी व समृद्ध देखना चाहते थे।

(8) हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर—उन्होंने सारे जीवन हिन्दू और मुसलमानों को भाई-भाई की तरह रहने की प्रेरणा दी।

(9) हरिजनोद्धारक—अछूत कहे जानेवाले भारतीय भाइयों को उन्होंने गले लगाया और उनके उद्धार के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहे।

(10) स्वदेशी वस्तु एवं खादी को महत्त्व—गांधीजी ने स्वयं भी और अपने अनुयायियों को भी स्वदेशी वस्तुओं और खादी अपनाने की प्रेरणा दी—

खादी का प्रचार घर-घर में
अब थी यही लगन जीवन की।

(11) आत्मविश्वास के धनी—गांधीजी आत्मविश्वास से परिपूर्ण थे, उन्होंने जो कुछ भी किया, वह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ किया और उसमें वे सफल भी हुए।

(12) सत्याग्रही—गांधीजी ने सत्य के बल पर पूरा भरोसा किया और अपने सत्याग्रह के बल पर ही उन्होंने अंग्रेजों को भारत छोड़कर ब्रिटेन चले जाने के लिए बाध्य कर दिया।

अन्ततः सार रूप में कहा जा सकता है कि जितने भी मानवोचित गुण हो सकते हैं, वे सब पूज्य महात्मा गांधी में विद्यमान थे। उनके निर्मल चरित्र पर उँगली उठाने का साहस किसी में है ही नहीं। उनकी उपलब्धियों और राष्ट्रीय महत्त्व को यदि कवि के दृष्टिकोण से देखें तो कवि की ये पंक्तियाँ उनके विषय में बिल्कुल सटीक बैठती हैं—

महत्ता हम सबों की क्या भला थी,
सभी उस वृद्ध माँझी की कला थी।

खण्ड 'ख'

8. (क) दिए गए संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2 + 5 = 7

संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिर्व्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि-भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते। इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च, यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते। इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति। ततः सुष्ठूक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति।

उत्तर : सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत-खण्ड**' में संकलित '**संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्**' नामक पाठ से अवतरित है।

अनुवाद—संस्कृत-साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुलगुरु कालिदास और अन्य भास, भारवि, भवभूति और महाकवि अपने ग्रन्थ-रत्नों के द्वारा आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं। यह भाषा हमारे लिए माता के समान सम्माननीय और वन्दनीय है; क्योंकि भारत माता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता और सांस्कृतिक एकता संस्कृत के द्वारा ही सुरक्षित हो सकती है। यह संस्कृत-भाषा सब भाषाओं में सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ है। इसलिए ठीक कहा गया है—''देववाणी (संस्कृत) सब भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य है।''

अथवा

बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिकजीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ता आसन्। परमद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्री सहयोग कारणानि, विश्वबन्धुत्वस्य, विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति। राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठावन्तौ। आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः। एवं च व्यवस्थिताः–

उत्तर : सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत-खण्ड**' में संकलित '**पञ्चशील-सिद्धान्ताः**' नामक पाठ से अवतरित है।

अनुवाद—बौद्धकाल में वैयक्तिक जीवन के उत्थान के लिए इन सिद्धान्तों का प्रयोग होता था; किन्तु आज ये सिद्धान्त राष्ट्रों की परस्पर मित्रता और सहयोग के हेतु, विश्वबन्धुत्व और विश्वशान्ति के साधन हैं। राष्ट्रनायक पण्डित जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमन्त्रित्वकाल में चीन देश के साथ भारत की मित्रता पंचशील-सिद्धान्तों के आधार पर ही हुई थी क्योंकि दोनों ही देश बौद्ध धर्म में आस्था रखनेवाले हैं। आधुनिक संसार में पंचशील-सिद्धान्तों ने नवीन राजनैतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया है और वे इस प्रकार निश्चित किए गए हैं।

(ख) दिए गए श्लोकों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए— 2 + 5 = 7

प्रजानां विनयाधानाद् रक्षणाद् भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥

उत्तर : सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत-खण्ड**' में संकलित '**नृपतिर्दिलीपः**' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद—प्रजाओं में विनय का आधान करने के कारण, रक्षा करने के कारण और पालन-पोषण करने के कारण वह (राजा दिलीप) उन (प्रजाओं) का पिता था। उन (प्रजाजनों) के पिता तो केवल जन्म के हेतु (कारण) थे।

अथवा

जयन्ति ते महाभागा जन-सेवा-परायणाः।
जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनोः क्वचित्॥

उत्तर : सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक के '**संस्कृत-खण्ड**' में संकलित '**महामना मालवीयः**' नामक पाठ से उद्धृत है।

© CHITRA PRAKASHAN

अनुवाद—जनसेवा में तत्पर रहनेवाले महापुरुषों की जय हो, जिनके यशरूपी शरीर को कहीं भी वृद्धावस्था और मृत्यु का भय नहीं है।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए— 2 + 2 = 4

(क) वैवस्वत: मनु: क: आसीत्?

उत्तर : वैवस्वत: मनु: माननीय: मनीषिणाम् आसीत्।

(ख) कस्य कामाय सर्वप्रियं भवति?

उत्तर : आत्मन: कामाय सर्वप्रियं भवति।

(ग) महर्षे: दयानन्दस्य पितु: किं नाम आसीत्?

उत्तर : महर्षे: दयानन्दस्य पितु: नाम श्रीकर्षणतिवारी आसीत्।

10. (क) 'हास्य' रस अथवा 'वत्सल' रस की परिभाषा लिखिए और उसका एक उदाहरण भी दीजिए। 1 + 1 = 2

उत्तर : हास्य रस की परिभाषा—वेशभूषा, वाणी, चेष्टा आदि की विकृति को देखकर हृदय में विनोद का जो भाव जाग्रत होता है, उसे 'हास' कहा जाता है। यही 'हास' विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से पुष्ट होकर 'हास्य रस' में परिणत हो जाता है।

उदाहरण—

बिन्ध्य के बासी उदासी तपो ब्रतधारि महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिबृन्द सुखारे।।
ह्वैहैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू ! करुना करि कानन को पगु धारे।।

अथवा

वत्सल रस की परिभाषा—पुत्र, बालक, शिष्य, अनुज आदि के प्रति रति का भाव स्नेह कहलाता है। यही भाव परिपुष्ट होकर 'वत्सल रस' की व्यंजना करता है।

उदाहरण—

तन की दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।
अति सुन्दर सोहत धूरि भरे छवि भूरि अनंग की धूरि धरैं।।
दमकैं दतियाँ दुति दामिनि ज्यौं किलकैं कल बाल-बिनोद करैं।
अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं।।

(ख) 'श्लेष अलंकार' अथवा 'अतिशयोक्ति' अलंकार की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण भी दीजिए। 1 + 1 = 2

उत्तर : श्लेष अलंकार की परिभाषा—जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उसे 'श्लिष्ट' कहते हैं। इस प्रकार ''जहाँ किसी शब्द के एक बार प्रयुक्त होने पर एक से अधिक अर्थ होते हों, वहाँ 'श्लेष' अलंकार होता है।''

उदाहरण— **रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।**
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

अथवा

अतिशयोक्ति अलंकार की परिभाषा—जहाँ किसी वस्तु, घटना अथवा परिस्थिति की वास्तविकता का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है, वहाँ 'अतिशयोक्ति' अलंकार होता है।

उदाहरण— **छाले परिबे कें डरनु, सकै न हाथ छुबाइ।**
झझकत हियैं गुलाब कैं, झँवा झँवैयत पाइ।।

(ग) 'चौपाई' छन्द अथवा 'कुण्डलिया' छन्द का लक्षण लिखते हुए उसका एक उदाहरण भी दीजिए। 1 + 1 = 2

उत्तर :

चौपाई

लक्षण—चौपाई सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। अन्त में जगण और तगण के प्रयोग का निषेध है।

उदाहरण— ।।। ऽ। ऽ।। ।।ऽऽ

निरखि सिद्ध साधक अनुरागे।
सहज सनेहु सराहन लागे।।
होत न भूतल भाउ भरत को।
अचर सचर चर अचर करत को।।

अथवा

कुण्डलिया

लक्षण—यह विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छह चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। आदि में एक दोहा और बाद में एक रोला जोड़कर कुण्डलिया छन्द बनता है। ये दोनों छन्द मानो कुण्डली रूप में एक-दूसरे से गुँथे रहते हैं, इसलिए इसे 'कुण्डलिया' छन्द कहते हैं। जिस शब्द से इस छन्द का प्रारम्भ होता है, उसी से इसका अन्त भी होता है। 'दोहे' का चौथा चरण 'रोला' के प्रथम चरण का भाग होकर आता है।

उदाहरण— ऽऽ ऽ। । ऽ।ऽ ।। ऽ।। ।। ऽ।

साईं बैर न कीजिए, गुरु पण्डित कवि यार।
बेटा बनिता पौरिया, यज्ञ करावन हार।।
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री जो होई।
बिप्र पड़ोसी बैद्य, आपुनो तपै रसोई।।
कह गिरिधर कविराय, जुगत सों यह चलि आई।
इन तेरह को तरह, दिए बनि आवै साईं।।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए— 2 + 7 = 9

(क) भारतीय किसानों की समस्याएँ
(ख) बढ़ें बेटियाँ, पढ़ें बेटियाँ
(ग) पर्यावरण संरक्षण
(घ) मेरा प्रिय कवि
(ङ) स्वास्थ्य शिक्षा से लाभ।

उत्तर :

(क) भारतीय किसानों की समस्याएँ

प्रस्तावना—भारत एक कृषिप्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनता ग्रामों में निवास करती है। यह कहना भी सर्वथा उचित ही प्रतीत होता है कि ग्राम ही भारत की आत्मा है, लेकिन रोजगार और अन्य सुविधाओं के कारण ग्रामीण शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। ग्राम भारतीय सभ्यता के प्रतीक हैं। भोजन एवं अन्य नित्यप्रति की आवश्यकताएँ गाँव ही पूर्ण करते हैं। भारत का औद्योगिक स्वरूप भी ग्रामीण कृषकों पर ही निर्भर है। वस्तुत: भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार ग्राम ही हैं। यदि गाँवों का विकास होगा तो देश भी समृद्ध होगा।

कृषकों की सामाजिक समस्याएँ—विकास के इस युग में भी गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन तथा परिवहन के साधनों की समुचित व्यवस्था नहीं हो सकी है, जिसके कारण भारतीय किसान को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वह साधनों के अभाव में अपने बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबन्ध भी नहीं कर पा रहा है, जो उसके पिछड़ने का सबसे बड़ा कारण है।

आर्थिक समस्याएँ—गाँवों के अधिकांश किसानों की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। उसकी उपज का उचित मूल्य उसे नहीं मिल पाता। धन के अभाव में वह अच्छी पैदावार भी नहीं ले पाता, जिसका प्रभाव सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास पर पड़ता है। गाँवों में निर्धनता, भुखमरी और बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर है। कृषकों को कृषि से सम्बन्धित जानकारी सुगमता से सुलभ नहीं हो पाती।

गाँवों की वर्तमान स्थिति—गाँवों में पक्की सड़कों का अभाव है। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा मनोरंजन के साधनों का उपयुक्त प्रबन्ध नहीं है। बेरोजगारी अपने चरम पर है तथा संचार के समुचित साधनों, पेय-जल, उपयुक्त निर्देशन एवं परामर्श सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव है।

भारत में कृषि की स्थिति—कृषि क्षेत्र में हमारी श्रमशक्ति का 55 प्रतिशत हिस्सा आजीविका प्राप्त कर रहा है और सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 26 प्रतिशत इसी क्षेत्र में मिलता है। देश के कुल निर्यात में कृषि का योगदान लगभग 25·6 प्रतिशत है। अनेक समस्याओं के बावजूद भी आज हम खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हैं।

भारतीय कृषि में विज्ञान का योगदान—जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। पहले इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए अन्नपूर्ति

©CHITRA PRAKASHAN

करना असम्भव ही प्रतीत होता था, परन्तु आज हम अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गए हैं। इसका श्रेय आधुनिक विज्ञान को ही है। विभिन्न प्रकार के उर्वरकों, बुआई-कटाई के आधुनिक साधनों, कीटनाशक दवाओं तथा सिंचाई के कृत्रिम साधनों ने खेती को अत्यन्त सुविधापूर्ण एवं सरल बना दिया है।

गाँवों के विकास हेतु नवीन योजनाएँ—गाँव के विकास हेतु सरकार द्वारा नवीन योजनाओं का शुभारम्भ किया जा रहा है। पंचवर्षीय योजनाओं में गाँवों के विकास को महत्त्व दिया जा रहा है। गाँवों में परिवहन, विद्युत्, सिंचाई के साधन, पेयजल, शिक्षा आदि की व्यवस्था हेतु व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। किसानों को उन्नत बीजों का प्रयोग करने के लिए विभिन्न योजनाओं द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है। आधुनिक कृषि यन्त्र खरीदने के लिए विभिन्न प्रकार के अनुदान दिए जा रहे हैं। जगह-जगह कृषि अनुसन्धान केन्द्र खोले जा रहे हैं। किसानों के उत्थान के लिए राष्ट्रीय-कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना की गई है, जिसका उद्देश्य कृषि, पशुपालन, कुटीर तथा ग्रामोद्योग को आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहित करना है।

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक—राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना सन् 1982 ई० को हुई थी। इसका उद्देश्य कृषि, लघु उद्योगों, कुटीर तथा ग्रामोद्योगों, दस्तकारियों और ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए ऋण उपलब्ध कराना था, ताकि समेकित ग्रामीण विकास को प्रोत्साहन दिया जा सके और ग्रामीण क्षेत्रों को खुशहाल बनाया जा सके।

कृषि अनुसन्धान और शिक्षा—कृषि अनुसन्धान और शिक्षा विभाग की स्थापना कृषि मन्त्रालय के अन्तर्गत सन् 1973 ई० में की गई थी। यह विभाग कृषि, पशुपालन और मत्स्यपालन के क्षेत्र में अनुसन्धान और शैक्षिक गतिविधियाँ संचालित करने के लिए उत्तरदायी है। कृषि मन्त्रालय के कृषि अनुसन्धान और शिक्षा विभाग के प्रमुख संगठन 'भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्' ने कृषि प्रौद्योगिकी के विकास, निवेश सामग्री तथा खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता लाने के लिए प्रमुख वैज्ञानिक जानकारियों को आम लोगों तक पहुँचाने के मामले में प्रमुख भूमिका निभाई है। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की गतिविधियाँ मुख्य रूप से आठ विषयों में विभाजित हैं; जैसे—फसल विज्ञान, बागवानी, मृदा कृषि विज्ञान और वानिकी, कृषि इंजीनियरी, पशु विज्ञान, मत्स्यिकी कृषि विस्तार और कृषि शिक्षा।

बागवानी—भारत की जलवायु और मृदा में व्यापक भिन्नता पाई जाती है, जो विविध प्रकार की बागवानी फसलों; जैसे फलों, सब्जियों, कन्द फसलों, सजावटी पौधे, औषधीय पौधे, मसाले तथा रोपण फसलों; जैसे नारियल, काजू, सुपारी आदि की खेती के लिए काफी उपयुक्त है। भारत अब नारियल, सुपारी, काजू, अदरक, हल्दी तथा काली मिर्च का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है।

फसलों के मौसम—भारत में मोटेतौर पर तीन फसलें होती हैं—खरीफ, रबी और जायद की फसल। खरीफ के मौसम में मुख्य रूप से धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, कपास, तिल, सोयाबीन और मूँगफली की खेती की जाती है। रबी की फसल में गेहूँ, ज्वार, चना, अलसी, तोरिया और सरसों उगाई जाती हैं। जायद की फसलों में खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, लौकी आदि फसलें उगाई जाती हैं।

उद्योगों के विकास में कृषि का योगदान—सन् 1947 ई० में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से भारत औद्योगिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हुआ। औद्योगिक विकास में कृषि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है। वस्त्र उद्योग, कागज उद्योग, रबड़ उद्योग तथा चीनी उद्योग पूर्णरूपेण कृषि पर ही निर्भर हैं। कृषि-उपज बढ़ाने के लिए समय-समय पर कृषकों को प्रोत्साहित किया तो जाता है, लेकिन उनकी उपज का उचित मूल्य उन्हें नहीं मिल पाता, जिसके कारण किसान वैज्ञानिक कृषि यन्त्रों का प्रयोग नहीं कर पाते। कृषि के वैज्ञानिक यन्त्रों के अभाव में किसान उद्योगों के लिए पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल तैयार नहीं कर पाते, जिसका प्रभाव उद्योगों के विकास पर पड़ता है। इसलिए औद्योगिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य मिले, ताकि किसान भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सके और वैज्ञानिक कृषि यन्त्रों का प्रयोग करके उत्पादन में वृद्धि कर सके।

उपसंहार—देश की समृद्धि के लिए ग्रामोत्थान आवश्यक है। सरकार ने भी ग्रामों के विकास के लिए सार्थक पहल की है। ग्रामीण क्षेत्रों में अब सड़कों, शिक्षा, चिकित्सा, दूर-संचार, लघु-उद्योग, विद्युत् तथा परिवहन व्यवस्था का प्रसार किया जा रहा है। कृषकों को उन्नत बीज, खाद तथा आधुनिक कृषि यन्त्र खरीदने के लिए ऋण के रूप में रुपये व अनुदान दिए जाते हैं तथा प्रत्येक क्षेत्र में किसानों को प्रोत्साहित किया जाता है। आशा है कि निकट भविष्य में कृषक आत्मनिर्भर होकर भारत को समृद्ध करने में पूर्ण योगदान देंगे।

(ख) बढ़ें बेटियाँ, पढ़ें बेटियाँ

प्रस्तावना—कहते हैं कि सुघड़, सुशील और सुशिक्षित स्त्री दो कुलों का उद्धार करती है। विवाहपर्यन्त वह अपने मातृकुल को सुधारती है और विवाहोपरान्त अपने पतिकुल को। उनके इस महत्त्व को प्रत्येक देश-काल में स्वीकार किया जाता रहा है, किन्तु यह विडम्बना ही है कि उनके अस्तित्व और शिक्षा पर सदैव से संकट छाया रहा है। विगत कुछ दशकों में यह संकट और अधिक गहरा हुआ है, जिसका परिणाम यह हुआ कि देश में बालक-बालिका लिंगानुपात सन् 1971 ई० की जनगणना के अनुसार प्रति एक हजार बालकों पर 930 बालिका था, जो सन् 1991 ई० में घटकर 927 हो गया। सन् 2011 ई० की जनगणना में यह बढ़कर 943 हो गया। मगर इसे सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता। जब तक बालक-बालिका लिंगानुपात बराबर नहीं हो जाता, तब तक किसी भी प्रगतिशील बुद्धिवादी समाज को विकसित अथवा प्रगतिशील समाज की संज्ञा नहीं दी जा सकती। महिला सशक्तीकरण की बात करना भी तब तक बेमानी ही है। माननीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीजी ने इस तथ्य के मर्म को जाना-समझा और सरकारी स्तर पर एक योजना चलाने की रूपरेखा तैयार की। इसके लिए उन्होंने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा राज्य से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना की शुरूआत की।

योजना के उद्देश्य—योजना के महत्त्व और महान् उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना की शुरूआत भारत सरकार के बाल विकास मन्त्रालय, स्वास्थ्य मन्त्रालय, परिवार कल्याण मन्त्रालय और मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की संयुक्त पहल से की गई। इस योजना के दोहरे लक्ष्य के अन्तर्गत न केवल लिंगानुपात की असमानता की दर में सन्तुलन लाना है, बल्कि कन्याओं को शिक्षा दिलाकर देश के विकास में उनकी भागेदारी को सुनिश्चित करना है। सौ करोड़ रुपयों की शुरूआती राशि के साथ इस योजना के माध्यम से महिलाओं के लिए कल्याणकारी सेवाओं के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया जा रहा है। सरकार द्वारा लिंग समानता के कार्य को मुख्यधारा से जोड़ने के अतिरिक्त स्कूली पाठ्यक्रमों में भी लिंग समानता से जुड़ा एक अध्याय रखा जाएगा। इसके आधार पर विद्यार्थी, अध्यापक और समुदाय कन्या शिशु और महिलाओं की आवश्यकताओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनेंगे तथा समाज का सौहार्दपूर्ण विकास होगा। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना के अन्तर्गत जिन महत्त्वपूर्ण गतिविधियों पर कार्य किया जा रहा है, वे इस प्रकार हैं—

(1) स्कूल मैनेजमैण्ट कमेटियों को सक्रिय करना, जिससे लड़कियों की स्कूलों में भर्तियाँ हो सकें।
(2) स्कूलों में बालिका मंच की शुरूआत।
(3) कन्याओं के लिए शौचालय निर्माण।
(4) बन्द पड़े शौचालयों को फिर से शुरू करना।
(5) कस्तूरबा गांधी बाल विद्यालयों को पूरा करना।
(6) पढ़ाई छोड़ चुकी लड़कियों को माध्यमिक स्कूलों में फिर भर्ती करने के लिए व्यापक अभियान।
(7) माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में लड़कियों के लिए छात्रावास शुरू करना।

© CHITRA PRAKASHAN

'बढ़ें बेटियाँ' से आशय—'बेटी बचाओ' योजना के रूप में इसका सबसे बड़ा उद्देश्य बालिकाओं के लिंगानुपात को बालकों के बराबर लाना है। मगर यहाँ प्रश्न यह खड़ा होता है कि हम बेटियों के लिंगानुपात को बराबर करके उनकी दशा और दिशा में परिवर्तन लाकर उन्हें देश-दुनिया के विकास की मुख्यधारा में सम्मिलित कर पाएँगे। यदि लिंगानुपात स्त्रियों के देश और समाज के विकास की मुख्यधारा से जुड़ने का मानक होता तो देश की संसद में स्त्रियों के 33 प्रतिशत आरक्षण का मुद्दा न खड़ा होता। मगर पुरुषों के लगभग बराबर जनसंख्या होने के बाद भी हमारी वर्तमान 543 सदस्यीय लोकसभा में महिलाओं की संख्या मात्र 66 है, जबकि लिंगानुपात के अनुसार यह स्वाभाविक रूप में पुरुषों की संख्या के लगभग आधी होनी चाहिए थी। इसलिए बेटियों को बचाकर उनकी संख्या में वृद्धि करने के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि वे निरन्तर आगे बढ़ें। उनकी प्रगति के मार्ग की प्रत्येक बाधा को दूर करके उन्हें उन्नति के उच्चतम शिखर तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त करें। 'बढ़ें बेटियाँ' नारे का उद्देश्य और आशय भी यही है।

बेटियों को आगे बढ़ाने के उपाय—हमारी बेटियाँ आगे बढ़ें और देश के विकास में अपना योगदान करें, इसके लिए अनेक उपाय किए जा सकते हैं, जिनमें से कुछ मुख्य उपाय इस प्रकार हैं—

(क) पढ़ें बेटियाँ—बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण और मुख्य उपाय यही है कि हमारी बेटियाँ बिना किसी बाधा और सामाजिक बन्धनों के उच्च शिक्षा प्राप्त करें तथा स्वयं अपने भविष्य का निर्माण करने में सक्षम हों। अभी तक देश में बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। शहरी क्षेत्रों में तो बालिकाओं की स्थिति कुछ ठीक भी है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति बड़ी दयनीय है। बालिकाओं की अशिक्षा के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा यह है कि लोग उन्हें 'पराया धन' मानते हैं। उनकी सोच है कि विवाहोपरान्त उसे दूसरे के घर जाकर घर-गृहस्थी का कार्य सँभालना है, इसलिए पढ़ने-लिखने के स्थान पर उसका घरेलू कार्यों में निपुण होना अनिवार्य है। उनकी यही सोच बेटियों के स्कूल जाने के मार्ग बन्द करके घर की चहारदीवारी में उन्हें कैद कर देती है। बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए सबसे पहले समाज की इसी निकृष्ट सोच को परिवर्तित करना होगा।

(ख) सामाजिक सुरक्षा—बेटियाँ पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बनें और देश के विकास में अपना योगदान दें, इसके लिए सबसे आवश्यक यह है कि हम समाज में ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जिससे घर से बाहर निकलनेवाली प्रत्येक बेटी और उसके माता-पिता का मन उनकी सुरक्षा को लेकर सशंकित न हो। आज बेटियाँ घर से बाहर जाकर सुरक्षित रहें और शाम को बिना किसी भय अथवा तनाव के घर वापस लौटें, यही सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज घर से बाहर बेटियाँ असुरक्षा का अनुभव करती हैं, वे शाम को जब तक सही-सलामत घर वापस नहीं आ जातीं, उनके माता-पिता की साँसें गले में अटकी रहती हैं। उनकी यही चिन्ता बेटी को घर के भीतर कैद रखने की अवधारणा को बल प्रदान करती है। जो माता-पिता किसी प्रकार अपने दिल पर पत्थर रखकर अपनी बेटियों को पढ़ा-लिखाकर योग्य बना भी देते हैं, वे भी उन्हें रोजगार के लिए घर से दूर इसलिए नहीं भेजते कि 'जमाना ठीक नहीं है।' अत: बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए इस जमाने को ठीक करना आवश्यक है अर्थात् हमें बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें सामाजिक सुरक्षा की गारण्टी देनी होगी।

(ग) रोजगार के समान अवसरों की उपलब्धता—अनेक प्रयासों के बाद भी बहुत-से सरकारी एवं गैर-सरकारी क्षेत्र ऐसे हैं, जिनको महिलाओं के लिए उपयुक्त नहीं माना गया है। सैन्य-सेवा एक ऐसा ही महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समान रोजगार के अवसर उपलब्ध नहीं हैं। यान्त्रिक अर्थात् टेक्नीकल क्षेत्र विशेषकर फील्ड वर्क को भी महिलाओं की सेवा के योग्य नहीं माना जाता है इसलिए इन क्षेत्रों में सेवा के लिए पुरुषों को वरीयता दी जाती है। यदि हमें बेटियों को आगे बढ़ाना है तो उनके लिए सभी क्षेत्रों में रोजगार के समान अवसर उपलब्ध कराने होंगे। यह सन्तोष का विषय है कि अब सैन्य और यान्त्रिक आदि सभी क्षेत्रों में महिलाएँ रोजगार के लिए आगे आ रही हैं और उन्हें सेवा का अवसर प्रदानकर उन्हें आगे आने के लिए प्रोत्साहित भी किया जा रहा है।

उपसंहार—बेटियाँ पढ़ें और आगे बढ़ें, इसका दायित्व केवल सरकार पर नहीं है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर इस बात का दायित्व है कि वह अपने स्तर पर वह हर सम्भव प्रयास करे, जिससे बेटियों को पढ़ने और आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिले। हम यह सुनिश्चित करें कि जब हम घर से बाहर हों तो किसी भी बेटी की सुरक्षा पर हमारे रहते कोई आँच नहीं आनी चाहिए। यदि कोई उनके मान-सम्मान को ठेस पहुँचाने की तनिक भी चेष्टा करे तो आगे बढ़कर उसे सुरक्षा प्रदान करनी होगी और उनके मान-सम्मान से खिलवाड़ करनेवालों को विधिसम्मत दण्ड दिलाकर अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करना होगा, जिससे हमारी बेटियाँ उन्मुक्त गगन में पंख पसारे नित नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकें।

(ग) पर्यावरण संरक्षण

प्रस्तावना—पर्यावरण शब्द 'परि + आवरण' के संयोग से निर्मित है। यहाँ 'परि' का अर्थ है—चारों ओर तथा 'आवरण' का अर्थ है—घेरा। अर्थात् ऐसी चीजों का समुच्चय, जो प्राणियों को चारों ओर से घेरे हुए है, उसे पर्यावरण कहते हैं। प्रकृति ने हमारे चारों ओर ऐसी वस्तुएँ और वातावरण निर्मित किए हैं, जो सब प्रकार से हमारी उन्नति और स्वास्थ्य के अनुकूल हैं। मगर हमने प्रकृति के इस सन्तुलन अर्थात् पर्यावरण को अपने क्रिया-कलाप से विकृत कर दिया है। इसलिए आज इसकी सुरक्षा की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। आज पर्यावरण सुरक्षा सम्पूर्ण विश्व की समस्या बन गई है।

पर्यावरण सुरक्षा की समस्या—आज मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का सपना देखने लगा है। यही कारण है कि आज प्राकृतिक सन्तुलन बिगड़ गया है। जीवनदायिनी प्रकृति कुपित होकर विनाश की ओर अग्रसर है, परन्तु मनुष्य इस असन्तुलन के प्रति अब भी सावधान नहीं हो रहा है, फलत: पर्यावरण सुरक्षा की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। निरन्तर जनसंख्या-वृद्धि, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण ने तीव्रगति से प्रकृति के हरे-भरे क्षेत्रों को कंकरीट के जगलों में परिवर्तित कर दिया है। आज श्वास लेने के लिए शुद्ध वायु का अभाव होता जा रहा है, जिससे अनेक प्रकार के रोग जन्म ले रहे हैं, ओजोन परत का क्षरण घातक होता जा रहा है, फिर भी मानव अपनी अज्ञानता के कारण पर्यावरण सुरक्षा के लिए निरन्तर खतरा बढ़ा रहा है।

'जल ही जीवन है' का जाप करनेवाला मनुष्य स्वयं जल के लिए समस्या बन गया है। उसके द्वारा शहरभर के मल-मूत्र, कचरे तथा कारखानों से निकलनेवाले अपशिष्ट पदार्थों को नदियों के जल में प्रवाहित कर दिया जाता है, जिससे जल अशुद्ध होता है। 'केन्द्रीय जल-स्वास्थ्य इंजीनियरिंग अनुसन्धान संस्थान' के अनुसार भारत में प्रति 1,00,000 व्यक्तियों में से 360 व्यक्तियों की मृत्यु आन्त्रशोथ (टायफॉयड, पेचिश) के कारण होती है। वर्तमान में शुद्ध पेयजल का संकट बढ़ता जा रहा है।

परमाणु-शक्ति उत्पादन-केन्द्रों और परमाणु परीक्षणों के परिणामस्वरूप जल, वायु तथा पृथ्वी पर रेडियोधर्मी पदार्थ छोटे-छोटे कणों के रूप में वातावरण में फैल जाते हैं, जो लोगों के लिए प्राणघातक सिद्ध होते हैं। यह रेडियोधर्मी प्रदूषण आगामी अनेक पीढ़ियों के लिए भयंकर समस्याएँ उत्पन्न करता है। स्वास्थ्य-सम्बन्धी समस्याएँ तो इन पीढ़ियों को जन्म से ही होती हैं।

इसी प्रकार पैदावार बढ़ाने के लिए किसान जिस तेजी के साथ कीटनाशक, शाकनाशक और रोगनाशक रसायनों तथा उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं, वह पर्यावरण सुरक्षा के लिए समस्या ही है।

वातावरण में चहुँओर मोटरकार, बस, जेट विमान, ट्रैक्टर, लाउडस्पीकर, बाजे, सायरन तथा कल-कारखानों की मशीनों से निकलती तीव्र-ध्वनियाँ ध्वनि-प्रदूषण को जन्म देकर निरन्तर पर्यावरण सुरक्षा के लिए समस्या बनती जा रही हैं।

© CHITRA PRAKASHAN

पर्यावरण सुरक्षा की महत्ता—पर्यावरण और प्राणियों का घनिष्ठ सम्बन्ध है, परन्तु मानवीय महत्त्वाकांक्षाओं, भूलों, प्रतिस्पर्द्धाओं के चलते पर्यावरण प्रदूषण का संकट उत्पन्न हो गया है। प्रदूषण के आधिक्य से पृथ्वी के अनेक जीव और वनस्पतियाँ लुप्त हो गए हैं और अनेक लुप्त होने के कगार पर हैं। यदि पर्यावरण प्रदूषण इसी गति से बढ़ता रहा तो वह दिन भी दूर नहीं है, जब मनुष्य का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा। इसीलिए पर्यावरण सुरक्षा से सम्बन्धित व्यापक अवधारणाएँ दिनोंदिन जन्म ले रही हैं। पर्यावरण सुरक्षा की महत्ता आज अन्तरराष्ट्रीय चिन्ता का विषय बन चुकी है। जून 1972 ई० में स्टॉकहोम में आयोजित संयुक्त राष्ट्र मानव पर्यावरण सम्मेलन में पर्यावरण सुरक्षा को लेकर एक घोषणा-पत्र जारी किया गया। तब से निरन्तर जलवायु परिवर्तन पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए जाते रहे हैं। दिसम्बर 2015 ई० में पेरिस में सम्पन्न हुए जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में 30 से 35 प्रतिशत तक कार्बन उत्सर्जन को कम करने का लक्ष्य रखा गया है। यह कमी वर्ष 2005 को आधार मानकर की जाएगी। भारत ने भी माननीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वर्ष 2030 तक अपने कार्बन उत्सर्जन में 33 से 35 प्रतिशत तक की कटौती का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके अन्तर्गत सन् 2030 ई० तक होनेवाले कुल बिजली उत्पादन में 40% हिस्सा कार्बनरहित ईंधन से होगा।

पर्यावरण सुरक्षा के उपाय—पर्यावरण सुरक्षा हेतु जन जागरण, सहयोग और समर्थन अनिवार्य है। प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उठाए गए छोटे-छोटे कदमों से बहुत ही सरल ढंग से पर्यावरण को सुरक्षित किया जा सकता है; जैसे—

- कचरे की मात्रा कम करना।
- कचरे को सही स्थान पर फेंकना।
- पॉलीबैग का प्रयोग बन्द करना।
- पुरानी वस्तुओं को नए ढंग से पुन: प्रयोग में लाना।
- रेन वाटर हार्वेस्टिंग द्वारा वर्षा-जल का संरक्षण करना।
- पानी की बर्बादी को रोकना।
- ऊर्जा संरक्षण करना, बिजली के दुरुपयोग को समाप्त करके उसका कम-से-कम प्रयोग करना।
- रिचार्जेबल बैटरी या अक्षय एल्कलाइन बैटरी का उपयोग करना।
- वायु-प्रदूषण एवं ध्वनि-प्रदूषण पर नियन्त्रण रखना।
- कृत्रिम उर्वरकों के स्थान पर जैव उर्वरकों का प्रयोग करना।
- अधिकाधिक संख्या में वृक्षारोपण करना।
- भारी मात्रा में हो रहे वृक्ष-कटान को रोकना।

इनके अतिरिक्त संचार माध्यमों के द्वारा प्रचार-प्रसार करके, अच्छे प्रशासकों, सजग नीति-निर्माताओं और प्रशिक्षित तकनीकी विशेषज्ञों की सहायता से पर्यावरण को सुरक्षित किया जा सकता है।

उपसंहार—हमें भविष्य में सुरक्षित एवं स्वस्थ जीवन की सम्भावना सुनिश्चित करने के लिए न केवल पर्यावरण की महत्ता समझनी होगी, अपितु उसे सुरक्षित रखने का भी उत्तरदायित्व निभाना होगा। यह याद रखना आवश्यक है कि पर्यावरण सुरक्षा के लिए उठा पहला कदम व्यक्तिगत स्तर पर हम से ही आरम्भ होता है। पर्यावरण की सुरक्षा करना पृथ्वी पर रहनेवाले समस्त व्यक्तियों का कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्यपालन के द्वारा ही पर्यावरण सुरक्षित हो सकेगा।

(घ) मेरा प्रिय कवि

प्रस्तावना—मैं यह तो नहीं कहता कि मैंने बहुत अधिक अध्ययन किया है तथापि भक्तिकालीन कवियों में कबीर, सूर और तुलसी तथा आधुनिक कवियों में प्रसाद, पन्त और महादेवी के काव्य का रसास्वादन अवश्य किया है। इन सभी कवियों के काव्य का अध्ययन करते समय तुलसी के काव्य की अलौकिकता के समक्ष मैं सदैव नतमस्तक होता रहा हूँ। उनकी भक्ति-भावना, समन्वयात्मक दृष्टिकोण तथा काव्य-सौष्ठव ने मुझे स्वाभाविक रूप से आकृष्ट किया है।

जन्म की परिस्थितियाँ—तुलसीदास का जन्म ऐसी विषम परिस्थितियों में हुआ, जब हिन्दू समाज अशक्त होकर विदेशी चंगुल में फँस चुका था। हिन्दू समाज की संस्कृति और सभ्यता का निरन्तर ह्रास होता जा रहा था और कहीं कोई प्रेरणा प्राप्ति के लिए आदर्श दिखलाई नहीं पड़ता था। इस युग में जहाँ एक ओर मन्दिरों का विध्वंस किया गया, ग्रामों व नगरों का विनाश हुआ, वहीं संस्कारों की भ्रष्टता भी चरमसीमा पर पहुँची। इसके अतिरिक्त तलवार के बल पर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था। सर्वत्र धार्मिक विषमताओं का ताण्डव नृत्य हो रहा था और विभिन्न सम्प्रदायों ने अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग अलापना आरम्भ कर दिया था। ऐसी परिस्थिति में भोली-भाली जनता यह समझने में असमर्थ थी कि वह किस सम्प्रदाय का आश्रय ले। उस समय दिग्भ्रमित जनता को ऐसे नाविक की आवश्यकता थी जो उसकी जीवनरूपी नौका की पतवार सँभाल ले।

गोस्वामी तुलसीदास ने अन्धकार के गर्त में डूबी जनता के समक्ष भगवान् राम का लोकमंगलकारी रूप प्रस्तुत किया और उसमें अपूर्व आशा एवं शक्ति का संचार किया। युगद्रष्टा तुलसी ने अपने 'श्रीरामचरितमानस' द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न मतों, सम्प्रदायों एवं धाराओं का समन्वय किया। उन्होंने अपने युग को नवीन दिशा, नई गति एवं नवीन प्रेरणा दी। उन्होंने सच्चे लोकनायक के समान वैमनस्य की चौड़ी होती हुई खाई को पाटने का सफल प्रयत्न किया।

तुलसीदास : एक लोकनायक के रूप में—**आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** के मतानुसार, "लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके; क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार-निष्ठा और विचार-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। बुद्धदेव समन्वयकारी थे, 'गीता' ने समन्वय की चेष्टा की और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।"

तुलसी के राम—तुलसी उन राम के उपासक थे जो सच्चिदानन्द परब्रह्म हैं; जिन्होंने भूमि का भार हरण करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लिया था—

जब-जब होई धर्म कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
तब-तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

तुलसीदास की निष्काम भक्ति-भावना—सच्ची भक्ति वही है, जिसमें आदान-प्रदान का भाव नहीं होता है। भक्त के लिए भक्ति का आनन्द ही उसका फल है। तुलसी के अनुसार—

मो सम दीन न दीन हित, तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंसमनि, हरहु बिषम भव भीर।।

तुलसी की समन्वय-साधना—तुलसी के काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता उसमें निहित समन्वय की प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति के कारण ही वे वास्तविक अर्थों में लोकनायक कहलाए। तुलसी के काव्य में समन्वय के निम्नलिखित रूप दृष्टिगत होते हैं—

(1) सगुण-निर्गुण का समन्वय—जब ईश्वर के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों से सम्बन्धित विवाद, दर्शन एवं भक्ति दोनों ही क्षेत्रों में प्रचलित था तो तुलसीदास ने कहा—

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा।
गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।

(2) कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय—तुलसी की भक्ति मनुष्य को संसार से विमुख करके अकर्मण्य बनानेवाली नहीं है, उनकी भक्ति तो सत्कर्म की प्रबल प्रेरणा देनेवाली है। उनका सिद्धान्त है कि राम के समान आचरण करो, रावण के सदृश दुष्कर्म नहीं।

तुलसी ने ज्ञान और भक्ति के धागे में राम-नाम का मोती पिरो दिया है—

हिय निर्गुन नयनन्हि सगुन, रसना राम सुनाम।
मनहुँ पुरट सम्पुट लसत, तुलसी ललित ललाम।।

(3) युगधर्म-समन्वय—भक्ति की प्राप्ति के लिए अनेक प्रकार के बाह्य तथा आन्तरिक साधनों की आवश्यकता होती है। ये साधन प्रत्येक युग के अनुसार बदलते रहते हैं और इन्हीं को युगधर्म की संज्ञा दी जाती है। तुलसी ने इनका भी विलक्षण समन्वय प्रस्तुत किया है—

© CHITRA PRAKASHAN

कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि, हरि नाम ते पावहिं लोग॥

(4) साहित्यिक समन्वय—साहित्यिक क्षेत्र में भाषा, छन्द, रस एवं अलंकार आदि की दृष्टि से भी तुलसी ने अनुपम समन्वय स्थापित किया। उस समय साहित्यिक क्षेत्र में विभिन्न भाषाएँ विद्यमान थीं। विभिन्न छन्दों में रचनाएँ की जाती थीं। तुलसी ने अपने काव्य में संस्कृत, अवधी तथा ब्रजभाषा का अद्‌भुत समन्वय किया।

तुलसी के दार्शनिक विचार—तुलसी ने किसी विशेष वाद को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने वैष्णव धर्म को इतना व्यापक रूप प्रदान किया कि उसके अन्तर्गत शैव, शाक्त और पुष्टिमार्गी भी सरलता से समाविष्ट हो गए। वस्तुत: तुलसी भक्त हैं और इसी आधार पर वह अपना व्यवहार निश्चित करते हैं। उनकी भक्ति सेवक-सेव्य भाव की है। वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं और राम को अपना स्वामी।

तुलसीकृत रचनाएँ—तुलसी के 12 ग्रन्थ प्रामाणिक माने जाते हैं। ये ग्रन्थ हैं—'श्रीरामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'गीतावली', 'कवितावली', 'दोहावली', 'रामललानहछू', 'पार्वती-मंगल', 'जानकी-मंगल', 'बरवै रामायण', 'वैराग्य-सन्दीपनी', 'श्रीकृष्णगीतावली' तथा 'रामाज्ञा-प्रश्नावली'। तुलसी की ये रचनाएँ विश्वसाहित्य की अनुपम निधि हैं।

उपसंहार—तुलसी ने अपने युग और भविष्य, स्वदेश और विश्व तथा व्यक्ति और समाज आदि सभी के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री दी है। तुलसी को आधुनिक दृष्टि ही नहीं, प्रत्येक युग की दृष्टि मूल्यवान् मानेगी; क्योंकि मणि की चमक अन्दर से आती है, बाहर से नहीं।

(ङ) स्वास्थ्य शिक्षा से लाभ

स्वास्थ्य शिक्षा से आशय—संसार के सुखों को भोगने का एकमात्र साधन हमारा शरीर है; अत: यह आवश्यक है कि शरीर स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट रहे, रोगमुक्त रहे। नीरोगी काया संसार का सबसे बड़ा सुख है। 'Health is Wealth' ठीक ही कहा गया है; क्योंकि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' यदि शरीर स्वस्थ नहीं तो मन भी स्वस्थ नहीं रह सकता। चरक ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मूलाधार स्वास्थ्य-रक्षा बताया है। स्वास्थ्य-शिक्षा के रूप में उन्होंने आहार-विहार, व्यायाम, पथ्य-अपथ्य के अनेक नियम और क्रियाकलापों के विषय में बताया है। इस दृष्टि से देखें तो स्वास्थ्य शिक्षा का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है।

स्वास्थ्य शिक्षा से लाभ—स्वास्थ्य शिक्षा से प्राप्त दिशा-निर्देशों का पालन करके कोई भी व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है। स्वस्थ व्यक्ति ही किसी राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है; क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति ही राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकता है।

स्वास्थ्य शिक्षा के अभाव में व्यक्ति अस्वस्थ हो जाता है और अस्वस्थ व्यक्ति आलसी, हठी, चिड़चिड़ा और क्रोधी हो जाता है। उसका किसी काम में मन नहीं लगता, उसी स्मरणशक्ति और कार्यक्षमता क्षीण हो जाती है, जबकि एक स्वस्थ व्यक्ति चुस्त और फुर्तीला होता है। उसके चेहरे पर चमक रहती है, उसके कार्य करने में उत्साह और उमंग दिखाई देते हैं। वह प्रसन्नचित्त रहता है। ऐसे व्यक्ति की कार्य और चिन्तन-क्षमता बढ़ जाती है और वह अपने समाज तथा देश को नई दिशा देने में सफल होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वस्थ शिक्षा जरूरी है।

स्वस्थ शिक्षा के अनिवार्य अंग—स्वास्थ्य शिक्षा के अनेक अनिवार्य अंग हैं। भोजन, व्यायाम, निद्रा और स्वच्छता स्वास्थ्य शिक्षा के मुख्य महत्त्वपूर्ण अंग हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है—स्वस्थ और नीरोग रहने के लिए पहली आवश्यकता है पौष्टिक एवं सन्तुलित आहार। भोजन शरीर की प्रकृति के अनुकूल और मौसम के अनुसार होना चाहिए। गरिष्ठ, तेल-मसालेयुक्त भोजन शरीर को हानि पहुँचाते हैं। हल्का, स्वादिष्ट व सुपाच्य भोजन शरीर को स्वस्थ रखता है और शक्ति देता है। भोजन नियमित समय पर ही करना चाहिए। आवश्यकता से अधिक भोजन भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। सदैव ताजा भोजन ही ग्रहण करना चाहिए। भोजन में फल, सब्जियाँ, दूध, दही, दालों आदि का सेवन उचित अनुपात में करना चाहिए। स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छ पानी पीना भी अत्यावश्यक है।

व्यायाम—स्वस्थ रहने का दूसरा मूलमन्त्र है—व्यायाम। खेलकूद और नियमित व्यायाम से तन और मन दोनों का पोषण होता है। नियमित व्यायाम शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाता है। शरीर के सभी तन्त्र भली प्रकार कार्य करते हैं। इससे शरीर में रक्तसंचार सुचारु रूप से होता है, मांसपेशियाँ सुदृढ़ होती हैं, पाचन-शक्ति बढ़ती है, हृदय और फेफड़े मजबूत बनते हैं, इन्द्रियाँ शक्तिसम्पन्न बनती हैं। कार्य करने की शक्ति बढ़ जाती है, परिणामस्वरूप सफलता आपके कदम चूमती है। इससे मन में साहस और आत्मविश्वास पैदा होता है। मन से अवसाद, चिन्ता और उदासी दूर हो जाती है और व्यक्ति प्रसन्नचित्त रहता है।

निद्रा—स्वास्थ्यरक्षा के लिए गहरी व शान्त निद्रा (नींद) भी अत्यन्त आवश्यक है। नींद से शरीर की थकावट दूर होती है, मस्तिष्क स्वस्थ होता है। प्रात: देर तक सोना और रात्रि देर तक जागना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

स्वच्छता—स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता परम अनिवार्य तत्त्व है। स्वच्छता तन की, मन की, आस-पास और परिवेश सभी जगह की होनी चाहिए। स्वास्थ्य में स्वच्छता के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए ही कहा गया है—

'स्वच्छ रहो, स्वस्थ रहो।'

गन्दगी रोगों को जन्म देती है; अत: हमें अपने शरीर, वस्त्रों व घर की सफाई की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमें घर के आस-पास व मुहल्ले की सफाई का भी ध्यान रखना चाहिए। स्वच्छ वातावरण मन को प्रसन्नता देता है। स्वास्थ्य में स्वच्छता के महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 ई० से स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की। यह अभियान आज अपने चरम पर है और इसका प्रभाव सारे भारतवर्ष के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में दिखाई देने लगा है। हमारा आचार-विचार भी शुद्ध होना चाहिए। मन के सकारात्मक व अच्छे विचार हमारे स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव डालते हैं।

उपसंहार—सुखमय और शान्तिपूर्ण जीवन के लिए स्वस्थ और नीरोगी रहना आवश्यक है और यह 'स्वास्थ्य शिक्षा से ही सम्भव है। आहार, नियमित व्यायाम और स्वच्छता का ध्यान रखते हुए हम अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख सकते हैं। एक 'तन्दुरुस्ती हजार नियामत' यानी संसार में इससे बड़ा ईश्वर का कोई वरदान नहीं है। तन्दुरुस्ती है तो सबकुछ है। इस सबकुछ की प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वास्थ्य शिक्षा अनिवार्य रूप से ग्रहण करनी चाहिए।

12. (क) (i) 'उपोषति' का सन्धि-विच्छेद है— 1

(अ) उप + ओषति (ब) उपो + षति
(ब) उ + पोषति (द) उप + औषति।

उत्तर : (अ) उप + ओषति।

(ii) 'रामष्टीकते' का सन्धि-विच्छेद है— 1

(अ) रामश् + टीकते (ब) रामस् + टीकते
(ब) राम् + ष्टीकते (द) राम + स्टीकते।

उत्तर : (ब) रामस् + टीमते।

(iii) 'विसर्जनीयस्य सः' सन्धि है— 1

(अ) उद् + कीर्णः
(ब) पेष् + ता
(स) गृहं + गच्छ
(द) दुष्टः + ताडयति।

उत्तर : (द) दुष्टः + ताडयति।

(ख) (i) 'प्रतिदिनम्' में समास है— 1

(अ) कर्मधारय (ब) तत्पुरुष
(स) बहुव्रीहि (द) अव्ययीभाव।

उत्तर : (द) अव्ययीभाव।

© CHITRA PRAKASHAN

(ii) 'नीलगाय' में समास है— 1

(अ) द्विगु (स) द्वन्द्व

(ब) बहुव्रीहि (द) कर्मधारय।

उत्तर : (द) कर्मधारय।

13. (क) (i) 'आत्मने' रूप है आत्मन् शब्द का— 1

(अ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

(ब) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

(स) षष्ठी विभक्ति, द्विवचन

(द) तृतीया विभक्ति, द्विवचन।

उत्तर : (ब) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

(ii) 'नामन्' का प्रथमा, बहुवचन में रूप होता है— 1

(अ) नाम्ना (ब) नाम्नी

(स) नाम्नो: (द) नामानि।

उत्तर : (द) नामानि।

(ख) (i) 'अनय:' में धातु, लकार और वचन है— 1

(अ) 'नय्' धातु, लङ्लकार, बहुवचन

(ब) 'ने' धातु, लट्लकार, द्विवचन

(स) 'नी' धातु, विधिलिङ्लकार, एकवचन

(द) 'नी' धातु, लङ्लकार, एकवचन।

उत्तर : (द) 'नी' धातु, लङ्लकार, एकवचन।

(ii) 'कृ' धातु विधिलिङ्लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप होगा— 1

(अ) करवाणि

(ब) कुर्या:

(स) कुर्व:

(द) कुर्याम्।

उत्तर : (द) कुर्याम्।

(ग) (i) 'गत:' शब्द में प्रत्यय है— 1

(अ) तव्यत् (ब) अनीयर्

(स) क्तवा (द) क्त।

उत्तर : (द) क्त।

(ii) 'कटुत्व' शब्द में प्रत्यय है— 1

(अ) मतुप् (ब) त्व

(स) वतुप् (द) तल्।

उत्तर : (ब) त्व।

(घ) (i) 'ग्रामं' निकषा नदी वहति। वाक्य में 'ग्रामम्' में विभक्ति है— 1

(अ) षष्ठी (ब) द्वितीया

(स) चतुर्थी (द) तृतीया।

उत्तर : (ब) द्वितीया।

(ii) 'शिरसा खल्वाट:।' में 'शिरसा' में विभक्ति है— 1

(अ) प्रथमा (ब) चतुर्थी

(स) पञ्चमी (द) तृतीया।

उत्तर : (द) तृतीया।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए— 2 + 2 = 4

(क) सड़क के दोनों ओर वृक्ष हैं।

(ख) मैं मोहन के साथ घर जाऊँगा।

(ग) श्रीगणेश को नमस्कार है।

(घ) कालिदास कवियों में श्रेष्ठ हैं।

उत्तर : **संस्कृत-अनुवाद**—

(क) वीथिम् उभयत: वृक्षा: सन्ति।

(ख) अहं मोहनेन सह गृहं गमिष्यामि।

(ग) श्रीगणेशाय नम:।

(घ) कालिदास: कविषु श्रेष्ठ: अस्ति।

●●

© CHITRA PRAKASHAN